जय जगत २०२०

न्याय एवं शान्ति की ओर अग्रसर

हरी और सफेद पुस्तिका

जय जगत मेनीफेस्टो

(घोषणा-पत्र)

www.jaijagat2020.org

विषय-सूची

प्रस्तावना

खंड I : परिचय : वैश्विक संकट के दो रूप

खंड II : शांति हासिल करने के लिए स्थिरता और समानता के मुद्दों के साथ जूझना

- स्थिरता
- आर्थिक समानता
- अहिंसा के माध्यम से शांति की दिशा में काम करना

खंड III : जय जगत : दृष्टि और मूल्य

खंड IV : बदलाव के लिए प्रतिबद्धता कायम रखना

- व्यक्तिगत बदलाव के लिए प्रतिबद्धता
- पृथ्वी के सन्दर्भ में जीवन के पोषण की रक्षा के लिए प्रतिबद्धता
- अहिंसक सामाजिक कार्रवाई के लिए प्रतिबद्धता
- जीवन शैली के प्रति अहिंसा के लिए प्रतिबद्धता
- वैश्विक नागरिकता के प्रति प्रतिबद्धता
- न्याय, मानवाधिकार और लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्धता

खंड V : बदलाव के लिए आयोजन

- युवाओं को जोड़ना
- युवा प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास
- महिला प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास
- समुदाय को संगठित करना
  - सामुदायिक स्वीकृति प्राप्त करना
  - सामुदायिक नेतृत्व का निर्माण
  - सामुदायिक कार्रवाई के लिए तैयारी
  - सामुदायिक कार्रवाई को अंजाम देना
- अहिंसक सामाजिक आंदोलन का विकास करना
- एकजुटता का निर्माण
- राज्य के साथ संवाद
- रचनात्मक कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण

खंड VI : महात्मा गांधी और जय जगत

खंड VII : अहिंसा के साथ शिक्षा सुधार

खंड VIII : अहिंसा के साथ अर्थव्यवस्था का सुधार

खंड IX : अहिंसा के साथ शासन और संस्थानों का सुधार

खंड X : निष्कर्ष

परिशिष्ट 1 : अहिंसा की शब्दावली

प्रस्तावना

इस मेनिफेस्टो को जय जगत की अवधारणा के तत्वों को समझने के लिए लिखा गया है है। जय जगत पिछले चार वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों (स्थानीय , राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय) में सभाओं, परिचर्चाओं एवं संवादों के माध्यम से उभर कर सामने आया है । यह तब हुआ जब हमने पिछले 25 वर्षों में भारत में एकता परिषद के कार्यों का व्यापक वर्णन करना शुरू किया और युवा प्रशिक्षण और अहिंसक तरीके से सामाजिक कार्रवाई के माध्यम से हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने की दिशा में कार्य किया | हमने यह देखना शुरू किया कि एक समान और विभिन्न प्रयोग, चाहे वे अलग-अलग जगह पर विभिन्न संगठनों द्वारा किये जा रहे थे, सभी समान रूप से रोचक रहे और काफी सामाजिक प्रभाव भी डाल रहे थे। फिर इन प्रयोगों को एक साथ जोड़ने की कोशिश की गई।

जलवायु परिवर्तन के जटिल संकट और राजनीतिक अस्थिरता के कारण विविध नागरिक पहलों को जोड़ने से कुछ तत्कालिक जरूरतों को पहचाना गया है। अधिक गरीबी और पलायन को बढ़ावा देने वाले युद्धों और संघर्ष ख़त्म करने के लिए, वैश्विक शांति को स्थापित करने के लिए एक वैश्विक आंदोलन की तत्काल आवश्यकता है। 1980 के दशक के शांति आंदोलन के विपरीत, आज, लोगों और राष्ट्रों के बीच व लोगों और पर्यावरण एवं पृथ्वी के बीच शांति को जोड़ने की जरूरत है। इस संघर्ष की जड़ें हथियार निर्माण में नहीं हैं, न ही ग्रीनहाउस गैसों के प्रसार में - यह हमारे उपभोग और उत्पादन; विशेषाधिकार और बहिष्कृत; और प्यार नफरत के तरीके में है। वैश्विक परिवर्तन के लिए सभी लोगों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

ये व्यापक संकट लोगों को संशोधित तरीकों और रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ व्यवहार परिवर्तन के लिए भी प्रेरित कर रहे हैं। महात्मा गांधी आज भी *सर्वोदय के* अपने विचार के लिए प्रासंगिक हैं, जिसमें व्यक्तिगत कार्रवाई की नैतिकता को समाहित करना शामिल है जो 'सभी की भलाई' की ओर जाता है। इसका तात्पर्य है कि हमारे एकात्म मानव की चेतना के उच्च तल को खोजने के पक्ष में हमारे पशुवत व्यवहार के कुछ लक्षणों को तोड़ना होगा।

इस 'हरी और सफ़ेद पुस्तिका' में 'हरा' शब्द पृथ्वी के साथ एक संतुलित संबंध को फिर से ठीक करने को संदर्भित करता है; और 'सफेद' न्याय के आधार पर शांति को आगे बढ़ाने के तरीके खोजने के लिए संदर्भित है। लेकिन इसकी मंशा एक दृष्टि देकर साहस जगाने की है। यह दृष्टि लोगों को, विशेष रूप से युवाओं को, अपनी स्वयं की शक्ति को एक समझ देने के लिए है, और यह उसे असंख्य तरीकों से व्यक्त करना सिखाती है, लेकिन अहिंसक तरीके से।

जिल कैर-हैरिस
और
राजगोपाल पी.वी.
नई दिल्ली, भारत
जनवरी, 2019

खंड I : परिचय : दो दुनिया (वैश्विक) का संकट

'हरी और सफ़ेद पुस्तिका' उन दो ग्रहों (एक ही ग्रह पृथ्वी पर दो तरह का जीवन) के मुद्दों के जवाब के रूप में आया है, जो मुद्दे मानव जाति के लिए अस्तित्व का खतरा पैदा करते हैं, साथ ही जलवायु परिवर्तन, युद्धों और संघर्षों के कारण जो बड़े पैमाने पर पलायन और गरीबी का कारण बन रहे हैं। जय जगत घोषणा-पत्र सामाजिक अस्तित्व की अनिवार्यता को वापस लाने के लिए इन महत्वपूर्ण संकटों को संदर्भित करता है। मानव ने पहले कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया है जहां हमारे अस्तित्व को खतरा हुआ हो। इसलिए यह पुस्तिका वर्तमान समय में बदलाव के लिए प्रेरक हो सकती है।

जय जगत एक दृष्टि प्रदान करके लोगों में साहस को बढ़ाने का प्रयास करता है। यह दृष्टि लोगों को, विशेष रूप से युवाओं को व्यक्तिगत और सामूहिकता के आधार पर परिवर्तन करने के लिए अपनी स्वयं की शक्ति को पहचानने के लिए है, न कि बड़े बाहरी प्रणालियों पर निर्भरता से जो लोगों के नियंत्रण से परे हैं। मानव शक्ति स्थानीय कार्रवाई को वैश्विक परिवर्तन से जोड़ता है, लेकिन इस घोषणापत्र में प्रोत्साहित की गई स्थानीय कार्रवाई से अहिंसा को जोड़ना है। जलवायु के मामले में, पूरे विश्व में स्थानीय जमीनी स्तर पर 'नवाचारों के हजारों मामले विकसित हुए हैं। हालांकि, क्योंकि वे छोटे हैं और क्योंकि उनमें अहिंसा स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होती है, इसलिए उन्हें आवश्यक सार्वजनिक समर्थन नहीं दिया गया है, और उनका सीमित प्रभाव रहा है। एक ही मंच पर इस तरह की विविध पहलों को इकट्ठा करना स्थानीय कार्रवाई के पक्ष में संतुलन को बेहतर बना सकता है जो पृथ्वी के संसाधनों पर जारी हिंसा को कम करने के लिए काम कर रहा है, और इस प्रक्रिया में, जलवायु संकट को दूर करता है।

इसी तरह, जय जगत कई देशों में सुरक्षा बलों के फैलाव का जवाब देता है, जो मानव समाज को सत्तावादी और केंद्रीय शासन के लिए प्रेरित कर रहे हैं। शस्त्रों की बिक्री हर समय उच्च स्तर पर होती है। लोगों को मुख्यधारा से अलग करना, गरीबों लोगों को गरीब बनाए रखना, सामाजिक विभाजन को बढ़ावा देना और लोगों को विभाजित रखने की रणनीति तेजी से आम होती जा रही है जो एक हिंसक राजनीतिक अर्थव्यवस्था को जन्म देती है। इस तरह की अर्थव्यवस्थाओं को युद्ध से बचने और नागरिक शांति बनाए रखने के लिए हथियार की जरूरत होती है। वास्तव में, हथियारों के भंडार, चाहे पारंपरिक, परमाणु, रासायनिक या जैविक हों, केवल युद्ध की अधिक संभावना को बढ़ाते हैं न कि वे शांति स्थापित करते हैं।

इस तरह की हिंसा कई जगहों पर होती है, और विशेष रूप से विकासशील देशों में प्रचलित है। बुनियादी आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर पकड़ रखने वाले लोगों के बीच एक छिपी हुई साझेदारी है और जिन्हें एक तरह के विकास के लिए सस्ते संसाधनों की आवश्यकता है जो केवल संघर्ष की ओर ले जाते हैं। बुनियादी मानवीय जरूरतों को पूरा करना सरकारों की प्राथमिकता होनी चाहिए, खासकर यदि औद्योगिक विकास में भूमि से बड़े पैमाने पर जाना, छोटे किसानों के लिए पारिश्रमिक की हानि, जल निकायों के प्रदूषण और ऐसे ही प्रतिकूल परिणाम शामिल हो। उत्पादन के लिए असीमित संसाधनों के अधिग्रहण का जलवायु संकट के साथ सीधा संबंध है। सरकार को विकास के हस्तक्षेप को इस तरह से संतुलित करने की आवश्यकता है कि लोग इसके केंद्र में हो, न कि मुनाफा।

जय जगत की दृष्टि इस मेनिफेस्टो के शीर्षक में निहित है : पृथ्वी ग्रह के साथ एक संतुलित संबंध को ठीक करने के लिए 'हरा'; और 'सफेद' न्याय के आधार पर शांति को बढ़ावा देने के तरीके खोजने के लिए है। जय जगत मेनिफेस्टो एक ऐसी कार्रवाई के लिए प्रेरित करने के लिए है जो स्थानीय कार्रवाई और वैश्विक परिवर्तन के बीच बेहतर तालमेल को संभव बनाता है ।

मनुष्यों में पूर्व ज्ञान की क्षमता होती है। वे मौसम के पैटर्न में बदलाव को समझ सकते हैं, हवाओं के बदलाव को देखकर आसन्न तूफान के संकेत समझ सकते हैं, वे समझ सकते हैं कि भौतिक परिवर्तनों के संबंध में क्या करना है। आज, जलवायु परिवर्तन और अधिक कठिन मौसम चक्र को अनुभव किया जा रहा है और वातावरण में बढ़ती हुई ग्रीन हाउस गैसों (जीएचजी) एवं इससे 2 डिग्री से ऊपर बढ़े तापमान के प्रभाव को समझा जा सकता है।

नतीजतन, लोग छोटे एवं स्थानीय कार्रवाइयों के माध्यम से जवाब दे रहे हैं। हर जगह कई प्रयोग किये जा रहे हैं कि हम क्या खाते हैं, हम किस तरह की कृषि का समर्थन कर रहे हैं, हम क्या उत्पादित कर रहे हैं, हम कैसे पानी व ऊर्जा संसाधन का संरक्षण कर रहे हैं, कैसे हम साथ रहते हैं, और इन जरूरतों को पूरा करने के लिए सूक्ष्म नवाचारों की एक पूरी श्रृंखला को देखते हैं। मध्यम स्तर पर, गांव, कस्बे, समुदाय और नगर पालिकाएं आत्मनिर्भर बनने के लिए टिकाऊ विकास पर कुछ प्रयोग कर रहे हैं, लेकिन ऐसे काम बड़े स्तर पर कम हैं। ये सब जुगनुओं की तरह अंधेरे में क्षणिक रोशनी की तरह है। हालांकि प्रकाश को देखा जा सकता है और इसमें दिशाबोध भी है, लेकिन आगे का रास्ता देखने के लिए यह अभी भी अपर्याप्त है।

'स्मॉल इज ब्यूटीफुल' यानी छोटा खूबसूरत होता है, का प्रयोग पांच दशकों से चल रहा है और पहली बार 1980 के दशक में इन्हें जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर उठाया गया था। इसके साथ ही, इसके विपरित भी उन व्यवसायों और हितों की सुरक्षा के लिए एक बड़ा अभियान का निर्माण हो रहा है (और

मीडिया में बेहतर कवरेज के साथ) जो यथास्थिति बनाए रखना चाहता है। वे एक तरफ पेट्रोलियम संसाधनों से लाभ कमाते हैं, और दूसरी ओर सस्ते श्रम और सस्ते संसाधनों पर निर्भर उत्पादन और खपत का एक पैटर्न बनाते हैं। शीत युद्ध के अंत के साथ, विकास के इस मॉडल में तेज वृद्धि देखी गई। इसका विरोध बहुत छोटे स्तर पर निरंतर होता रहा। एक ओर वे लोग थे, जो अपनी मुनाफाखोरी के लिए पागल थे, और दूसरी ओर वे जो कानून, नियमों और सरकारों की नीतियों के माध्यम से काम करते थे।

इसने बड़ी संख्या में वैश्विक संघर्षों को जन्म दिया है और मीडिया इन युद्धों के इन भीषण रूप को उसी समय में दिखाने से नहीं शर्माता है। हथियार बाजार के सहायक उत्पादकों के एक व्यापक लॉबी द्वारा समर्थित, हथियारों के व्यापारियों के लिए लंबा युद्ध एक बाजार बन जाता है। इन्हें सरकारों द्वारा अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान और युद्ध के खिलाफ एक निवारक के रूप में बढ़ावा दिया जाता है। बड़ी मात्रा में सैन्य उत्पादन होने का मतलब है कि इसे अधिक खरीद के आदेश के लिए उपयोग किया जाना है, इसलिए युद्ध एक लाभदायक उद्यम बन जाता है। जैसे-जैसे युद्ध की तकनीक अधिक आधुनिक और व्यापक हो जाती है, तकनीकी विशेषज्ञों के बिना स्थानीय लोगों के लिए विभिन्न समाधान प्रदान करना मुश्किल होता है। उनकी राय भोली मानकर टाल दिया जाता है। इस प्रकार, शांति पर सार्वजनिक विमर्श की सीमित गुंजाइश है जो युद्ध की अर्थव्यवस्था को चुनौती दे सकती हो।

युद्ध की अर्थव्यवस्था भय पैदा करती है और यह बड़ी संख्या में लोगों को दूसरों की कीमत पर भौतिक सुरक्षा के साथ खुद को बचाने में धकेलती है, खासकर अगर वे 'अन्य लोग बहुत दूर हैं' या 'शांति के लिए खतरा' हैं। आबादी का एक हिस्सा युद्ध की अर्थव्यवस्था से प्रभावित है; एक परिणाम के रूप, हिंसा बढ़ जाती है और नागरिक जीवन के सभी क्षेत्रों, व्यावसायिक गतिविधियों, शिक्षा या राजनीतिमें भ्रष्टचार शुरू हो जाता है। साधारण व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में हिंसा को स्वीकार करने के लिए अभ्यस्त हो जाता है और यह सामान्य हो जाता है। धीरे-धीरे, हिंसा समुदाय की मंजूरी या लोकतांत्रिक मानदंडों को नष्ट कर देती है और हिंसक साधनों तक पहुंच रखने वाले लोग असुरक्षित प्रभाव को बनाए रखते हैं।

बुनियादी सुरक्षा और गरिमा की कमी वाले लोगों को चुप नहीं बैठते हैं। वे हिंसक और अहिंसक दोनों तरह के विभिन्न संगठनों से प्रेरित होते हैं, उनमें शामिल होते हैं और समाधान ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं। उनकी ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। वे सबसे अधिक कठिन परिस्थितियों में भी महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त करने में सक्षम हैं। वर्ल्ड सोशल फोरम आंदोलन अहिंसक संगठनों को किनारे करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा है जहां लोगों ने खुद को भारी बाधाओं को दूर करने के लिए अपनी विशाल क्षमता को दिखाया।

हालांकि, यह स्पष्ट हो गया है कि सामाजिक आंदोलन जो विपक्ष को ध्रुवीकरण से बचाने के लिए विशेष उपायों को एकीकृत नहीं करते हैं, लंबे समय तक उनके टिकाऊ बने रहने की संभावना नहीं है। उन आंदोलनों को जो अहिंसक हैं, और जो अपने क्षेत्रों के निर्माण की प्रक्रिया में प्रतिरोध का शिकार

होते हैं, ऐसी दुनिया में उनके बने रहने की संभावना अधिक है जो हिंसक राजनीतिक संस्कृति से परिभाषित होती है।

अहिंसा के आधार पर सामाजिक आंदोलनों को एक साथ लाने के लिए जय जगत एक छोटी सी पहल है। बड़े वैश्विक परिवर्तन के लिए स्थानीय संघर्षों और पहलों को जोड़ना तब अधिक प्रभावी ढंग से काम करता है जब सत्ता और विपक्ष के सिद्धांत फ्रेम से बाहर रह जाते हैं। वे (पक्ष एवं विपक्ष) केवल उसी हिंसक राजनीतिक संस्कृति को बढ़ाते हैं जिसे कम किया जाना था। इस प्रकार, अधिक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अहिंसक आंदोलनों को अपनाया जाना जरूरी है क्योंकि वे लोगों के लिए व्यावहारिक समाधान पेश करते हैं। वे जमीनी स्तर पर व्यवहार में करने के लिए पहचाने जाते हैं, फिर वे उसे सिद्धांतों में अपनाते हैं, यानी वे 'नीचे से ऊपर' के सिद्धांत पर काम करते हैं। जय जगत हिंसा की संस्कृति से दूर परिवर्तन में इस दृष्टिकोण का उपयोग करता है।

पिछले 30 वर्षों में, 'वैश्विक सोच और स्थानीय स्तर पर कार्रवाई' की नई धारणा प्रमुखता से उभरी है। स्थानीय स्तर पर कार्रवाई प्रत्येक व्यक्ति, समूह, गांव-क्षेत्र की स्वायत्तता को अभिव्यक्त करती है। विश्व स्तर पर सोचने के लिए एक साथ हमें आम लोगों के भलाई के लिए तीन पहलुओं को ध्यान में रखना है : आर्थिक पहलू (मानव की जरूरतों को पूरा करने के लिए माल का उत्पादन), सामाजिक पहलू (समाज की आपसी निर्भरता और सभी की गरिमा की रक्षा), और पारिस्थितिक पहलू (जीवन और हमारे ग्रह की जैव विविधता का संरक्षण)।
Etienne Godinot: Vers une économie non-violente: Compte-rendu du colloque international organisé à Bhopal (India) 2010.

खंड II : शांति हासिल करने के लिए स्थिरता और समता के मुद्दों के साथ जूझना

जब तक हम स्थिरता और समता के मौजूदा मुद्दों से जूझते रहेंगे, खासकर आर्थिक क्षेत्र में, तब तक हम स्थानीय कार्रवाई के माध्यम से दुनिया की समस्या का समाधान नहीं कर सकते। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप तकनीकी विकास हुआ है, जिसने लेन-देन और संचार की लागत को कम किया है, लेकिन वह उनकी वास्तविक पारिस्थितिक और सामाजिक लागतों को बाहरी करके उन्हें छुपाता है। इस परिदृश्य में, स्थिरता और समता को दरकिनार कर दिया गया है। इसकी वजह से ही संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को विकास के लिए किए जाने वाले कार्यों में स्थिरता और समता को फिर से केंद्र में लाने का प्रयास किया है।

स्थिरता और समता को स्थानीय और वैश्विक कार्रवाई में एकीकृत करने के लिए, हमें भौतिक उन्नति से परे एक लक्ष्य की आवश्यकता है। अंतिम लक्ष्य एक शांतिपूर्ण समाज होना चाहिए, कुछ व्यक्तियों या समूहों के परिणामस्वरूप संघर्ष से घिरा हुआ समाज नहीं चाहिए, जिसमें कई लोगों की कीमत पर कुछ लोग लाभान्वित होते हैं। यही कारण है कि सामाजिक और आर्थिक विकल्पों में शांति और अहिंसा के मुद्दे महत्वपूर्ण हो गए हैं।

इस खंड में, हम वैश्विक स्तर पर स्थिरता, समता और शांति के मुद्दों को देखते हैं। हम जानते हैं कि स्थानीय, समुदायों और गांव व नगरीय क्षेत्रों में वास्तविक कार्रवाई हो रही हैं, लेकिन कई छोटी पहल एक साथ वैश्विक प्रभाव डालती हैं।

स्थिरता

1972 में स्टॉकहोम में आयोजित पहले अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन के समय सीमित तेल संसाधनों की कठिन चुनौतियों के प्रति जागरूकता और मानव निर्मित पर्यावरण बदलाव को देखा जा रहा था। 1988 तक, ब्रुन्डलैंड कमीशन की रिपोर्ट के प्रकाशन के साथ, पर्यावरण और विकास को एक साथ लाया गया और 'स्थिरता' की धारणा एक महत्वपूर्ण बेंचमार्क यानी एक मानक बन गई जिसे बाद में अधिकांश सरकारों ने अपनाया। जलवायु उत्सर्जन, पहली बार सम्मेलन द्वारा 1992 में लागू किया गया था, और जिसमें बाद में 2005 में क्योटो प्रोटोकॉल के माध्यम से और हाल ही में 2015 में पेरिस समझौते के माध्यम से संशोधन किया गया।

इन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और प्रोटोकॉल के बावजूद, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में देखा गया है कि 'निर्विवाद सबूत है कि दुनिया एक अस्थिर रास्ते से नीचे जा रही है', और 'यहां और तेजी से गिरने से बचने की जरूरत है, जो पृथ्वी के जीवन संबंधी मामलों में सामान्यतः अपरिवर्तनीय बदलाव कर सकता है।' (वैश्विक पर्यावरण आउटलुक, 5 : 2012)।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य सुरक्षा और पोषण पर विश्व रिपोर्ट कहता है : कठिन एवं प्रतिकूल मौसम की घटनाएं पिछले साल वैश्विक भूख बढ़ने का एक प्रमुख कारण थीं। मौसम की इस प्रवृत्ति के कारण सबसे ज्यादा महिलाओं, शिशुओं और बूढ़े लोगों पर असर पड़ा। पिछले तीन वर्षों में भूख से पीड़ित लोगों की संख्या पिछले लगातार बढ़ रही है, जो लगभग एक दशक पहले की स्थिति की तरह है। समान रूप से चिंता का विषय है कि पांच में से 22.2 प्रतिशत बच्चे 2017 में ठिगनापन यानी कुपोषण से प्रभावित हैं।

जलवायु परिवर्तन पहले से ही पारिस्थितिकी तंत्र, अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहा है। औसत तापमान बढ़ने का मतलब कुछ क्षेत्रों में बहुत अधिक गर्मी का अनुभव होगा और कुछ इलाकों में अत्यधिक ठंड हो सकता है, जिसका परिणाम बाढ़, सूखा और भीषण गर्मी हो सकता है। हम जो खतरनाक तूफान देखते हैं, वे हमारे गर्म वातावरण में संग्रहित ऊर्जा में बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप अन्य प्रतिकूल मौसम की घटनाओं को दर्शाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव के उच्च स्तरीय ग्रह के वैश्विक स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, 'जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन और इसके क्योटो प्रोटोकॉल को अपनाने के बावजूद ईंधन के दहन से वार्षिक कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में 1990 से 2009 के बीच 38 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

दुनिया के प्रमुख वैज्ञानिकों का कहना है कि इस खतरनाक स्तर को रोकने के लिए, सरकारें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए ठोस कार्रवाई के माध्यम से ग्लोबल वार्मिंग को 2 फीसदी से कम करने के लिए नीति निर्माताओं के साथ काम कर रही है। वर्तमान रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि कैसे मौसम के चरम पैटर्न सामान्य हो रहे हैं। 2015 में पेरिस शिखर सम्मेलन ने अपने उत्सर्जन को सीमित करने के लिए सदस्य राज्यों की प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाने में एक लंबा रास्ता तय किया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हालांकि कई झटके आए हैं, और वृहद स्तर पर कोई बदलाव नहीं हुआ है, लेकिन नागरिकों, स्थानीय सरकारों और नागरिक समाज द्वारा सूक्ष्म और मध्यम स्तरों पर कई बदलाव हो रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र हाल के समय में देख रहा है कि कैसे 2015 में लाए गए सतत् विकास लक्ष्यों के माध्यम से समझौता कर 2030 तक अंतरराष्ट्रीय विकास में स्थिरता लाने के लिए कोशिश की जा रही है। यह सर्वोपरि है कि एसडीजी के कार्यान्वयन में मुख्य रूप से तकनीकी नवाचार की तुलना में सामाजिक समाधान होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन की जिम्मेदारी लेने वाले दुनिया भर के नागरिकों के बिना आवश्यक बदलाव करना मुश्किल होगा।

सतत् विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए उम्मीदों को प्रौद्योगिकीय नवाचारों पर रखा गया है। ऐसा माना जाता है 'हरित विकास' का वादा यह है कि प्रौद्योगिकियां उत्पादन और खपत के अधिक स्थाई तरीकों को स्थानांतरित करने की अनुमति देंगी और इस तरह वे विकास पर पारिस्थितिक प्रभावों को कम कर सकती है। यह बिना उन सीमाओं को पार किए, जो पृथ्वी एवं मानव सभ्यता को खतरे में डाले, दुनिया के सभी तरह के समुदायों को सबसे समृद्ध देशों की जीवन शैली को अपनाने की अनुमति देगा।

यह उसका एक भ्रम है। बिना जीवन शैली में परिवर्तन किए तकनीकी विकास से वह परिवर्तन नहीं होगा, जिसकी हमें जरूरत है। कुछ मामलों यह भी हो सकता है कि यह बढ़ी हुई खपत को और बढ़ा दे, इस घटना को 'रिबाउंड प्रभाव' के रूप में जाना जाता है। इसके विपरीत, ब्लूप्रिंट के लिए इस तरह की जीवन शैली में बदलाव के खाका गरीबों द्वारा विकसित सामाजिक नवाचारों द्वारा तैयार किए जाते हैं। आर्थिक गिरावट और प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए कम संसाधनों के साथ अधिक उत्पादन करना, बचत करना एवं अपशिष्ट से बचना, विविधता का आनंद लेना, भरोसेमंद साझादारी करना और एकजुटता के के लिए नेटवर्क तैयार करना ही बचाव के सर्वोत्तम उपाय हैं। ये कुछ सबक हैं, जो वे सिखाते हैं और इनसे हमें जरूर सबक लेना चाहिए।

तकनीकी नवाचारों के विपरीत, सामाजिक नवाचारों को बौद्धिक संपदा अधिकारों से नहीं जोड़ा जा सकता है, और वे बड़ी फर्मों में काम करने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों द्वारा उपयोगकर्ताओं को नहीं सौंपे जाते हैं। इसके बजाय वे लोकतांत्रिक हैं। वे खुले उपयोग में साझा किए जाते हैं। वे व्यवस्थित रूप से विकसित किए जाते हैं और एक नीचे से ऊपर तक पहुंचने वाला दृष्टिकोण रखते हैं। वे केंद्रीकरण की ओर नहीं, बल्कि विकेंद्रीकरण की ओर ले जाते हैं। वे हर समस्या के समान समाधानों के प्रसार के लिए नेतृत्व नहीं करते हैं, लोगों से यह कहना कि वे उन प्रौद्योगिकियों को अपनाएं, जो 'प्रगति' के नाम पर उन पर

थोपे गए हैं, इसके बजाय सामाजिक नवाचार स्थानीय समुदायों की विविधता को बढ़ावा देते हैं और उनको महत्व देते हैं। और उन समाधानों को खोजने के लिए तैयार होते हैं जो उस विशेष संदर्भ के लिए सबसे उपयुक्त है और जिसमें हम रहते हैं। वे बेपरवाह नहीं हैं, और वे नई निर्भरता को बढ़ावा नहीं देते, बल्कि वे स्वायत्तता और आत्मनिर्णय को सशक्त और बढ़ावा देते हैं।

Olivier de Schutter (2018): 'Happiness within Boundaries' (Declaration prepared for Jai Jagat).

आर्थिक समता

एक और प्रमुख मुद्दा जो वैश्वीकरण से उत्पन्न हुआ है वह सबसे अमीर और सबसे गरीब व्यक्तियों के बीच वर्तमान आय की असमानता। यह दोनों के बीच खाई को और बढ़ा रहा है। भारत के 1 फीसदी सबसे अमीर लोगों के पास देश की कुल संपत्ति का 58 फीसदी है, जो कि वैश्विक स्तर पर लगभग 50 फीसदी से अधिक है।

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की वार्षिक बैठक से पहले ऑक्सफैम द्वारा जारी 2018 में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में अभी 57 अरबपतियों के पास देश की 70 प्रतिशत आबादी के बराबर धन (216 बिलियन डॉलर यानी 152982 करोड़ रुपए) है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि पिछले दो दशकों में चीन, इंडोनेशिया, लाओस, भारत, बांग्लादेश और श्रीलंका में सबसे अधिक 10 प्रतिशत आबादी ने अपनी आय में 15 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की है, जबकि 10 प्रतिशत सबसे गरीब लोगों की आय में 15 प्रतिशत से अधिक की गिरावट देखी गई है।

ऑटोमेटिक मशीनों ने बड़े पैमाने पर उत्पादन किया है। जुलाई 2017 में विश्व बैंक के एक लेख में कहा गया था कि 'ऑटोमेटिक मशीनों से भारत में 69 फीसदी नौकरियों पर खतरा है, जबकि चीन में 77 फीसदी।' प्रौद्योगिकी विकासशील देशों के पारंपरिक आर्थिक रास्तों को बुनियादी रूप से बाधित कर सकती है। ऑटोमेशन से कॉर्पोरेट्स को अधिक उत्पादन करने में मदद मिलती है, लेकिन सवाल यह है कि इसे कौन खरीदेगा?

विकास का वर्तमान प्रतिमान ट्रिकल डाउन इकोनॉमिक्स पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि पैसा लोगों को 'जरूरत पड़ने' पर मिलता है। निजी क्षेत्र में, व्यापार विस्तार में मुनाफे को फिर से लगाया जाता है, जिससे नौकरियों और सामूहिक खपत के मामले में पूरे समाज को लाभ मिलता है। इस कारण से, सरकारें स्वेच्छा से बड़े व्यवसायों, विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों को सब्सिडी और अन्य सहायता प्रदान करती हैं। यह अत्यधिक विवादास्पद है। विकासशील देशों में मौजूदा आर्थिक नीतियों का पूरा

जोर बुनियादी ढांचे और शहरीकरण पर है, जहां सरकार और कंपनी साझेदारी में एक साथ काम करते हैं। यह विकास को अधिक सड़कों, बुलेट ट्रेनों, स्मार्ट शहरों, आदि में परिवर्तित करता है।

वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों में उपेक्षा और कम निवेश ने गांवों को अस्त-व्यस्त कर दिया है। नतीजतन, अत्यधिक गरीबी के उच्च स्तर और कोई आजीविका नहीं होने के कारण हाशि्ए पर पड़े व्यक्तियों का एक बड़ा समूह पलायन करने के लिए मजबूर है। ऐसे में भोजन, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी जरूरी जरूरतों को पूरा किया जाना चाहिए। यदि सही वातावरण मिले तो लोग खुद इसे हासिल करने में सक्षम हैं।

निगमों एवं कंपनियों ने लोगों से ज्यादा लाभ को महत्व दिया। आर्थिक विकास के मंत्र का कोई मतलब नहीं है अगर लोग अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। उदाहरण के लिए, यदि कृषि निवेश और मूल्य निर्धारण में सरकार की समर्थन नीतियां खाद्य सुरक्षा को खतरे में डालती हैं, तो लोगों की बुनियादी जरूरतें खतरे में हैं। बड़े पैमाने पर कृषि निर्यात के हितों में छोटे किसानों की पहुंच से परे बीज और कृषि के लिए जरूरी अन्य संसाधनों को रखने से किसान आत्महत्या कर रहे हैं और उनमें अशांति फैल रही है, जो लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाने का एक और उदाहरण है।

इससे पहले, सरकारें नियामक थीं, हितों को संतुलित करने वाली थी। अब वे निवेश के लिए प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दे रही हैं, जिसके लिए वे लगातार उन नीतियों का त्याग कर रही हैं, जो लोगों के भूमि अधिकार, श्रमिकों के लिए बेहतर मजदूरी और संसाधन-निर्भर लोगों के हाथों में रहने वाले संसाधनों को रहने देना सुनिश्चित करती हैं। वास्तव में, मुट्ठी भर वैश्विक कॉरपोरेट मालिकों ने, विभिन्न राजनेताओं के समर्थन के साथ, संपत्तियों के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है, जो एक दौड़ में नीचे की सबसे बड़ी जनसंख्या को पीछे छोड़ रहा है। निवेश के मुक्त प्रवाह के साथ, राष्ट्रों और लोगों की संप्रभु निर्णय लेने की शक्ति समाप्त हो गई है।

हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि एक अलग तरह का वैश्वीकरण जो अधिक न्यायसंगत है, संभव नहीं है। यह संभव है। लोकतांत्रिक संस्थाओं या चुनावों के माध्यम से सार्वजनिक हित का निर्धारण करने वाली समितियां मौजूद हैं। निर्णय लेने की एक अवधारणा मौजूद है जिसमें सभी समुदाय के सदस्य एक-दूसरे के साथ सद्भाव में रहते हैं और प्रकृति कई आदिवासी समुदायों के लिए केंद्रीय है। सर्वोदय की अवधारणा सभी की भलाई पर आधारित समाज का एक गांधीवादी तरीका है, जिसे आजमाया और परखा गया है और वह सभी की भलाई की धारणा है, जिसके तहत विकास के लिए नागरिक समाज समुदायों के साथ काम कर रहा है। लेकिन अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए इनका अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया जाना आवश्यक है।

अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के साथ, कई मुद्दों को वैश्विक स्तर पर सुलझाया जा सकता है। यह वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के प्रबंधन के लिए हमें सामने लाता है, जिसमें शामिल हैं - जलवायु, प्रदूषण, उचित व्यापार की प्रणाली, वित्तीय शक्ति, सुरक्षा और शांति का नियंत्रण, और सामान्य

सामान जो दुर्लभ होते जा रहे हैं या असमान तरीके से वितरित हैं - जैसे पीने का पानी, समुद्री जीव, जैव विविधता और अन्य प्राकृतिक संसाधन। एक मानव अर्थव्यवस्था में वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के प्रबंधन को राष्ट्रीय हितों के आगे सामान्य हित में रखना चाहिए, और यह जांचने के लिए कि राष्ट्र इसकी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करते हैं, व्यवस्था होनी चाहिए। जिस संस्थान के पास ऐसा करने की वैधता है, वह यूएनओ यानी संयुक्त राष्ट्र संघ है।

Yves Berthelot et al. (2017): Paths of Human Economy. Emerald Publishers, Chennai, India.

अहिंसा के माध्यम से शांति की दिशा में काम करना

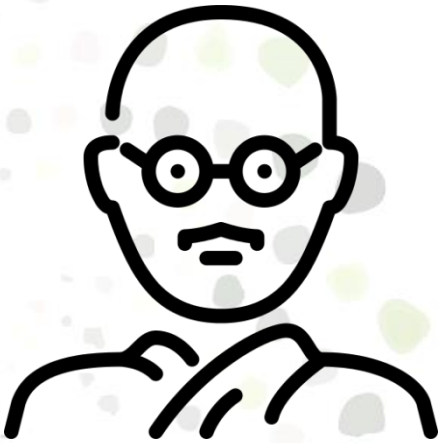

शांति प्राप्त करने का अर्थ केवल सामाजिक उन्नति के रूप में भौतिक उन्नति नहीं है, बल्कि स्थानीय पहलों के आधार पर एक अलग तरह की अर्थव्यवस्था की फिर से परिकल्पना भी है जो समाजों को शांति की ओर ले जाती है। विकास में अहिंसा को एकीकृत करने से एकता की भावना पैदा होती है न कि अलगाव की।

इसके लिए हमारे विकास के हर पहलू में अहिंसा और शांति को एकीकृत करने की आवश्यकता है। गांधी जी ने कहा था, 'साधनों की तुलना बीज से की जा सकती है और उसका अंत एक पेड़ है, और इसका मतलब है कि बीज और पेड़ के बीच एक पवित्र संबंध है।' दूसरे शब्दों में, स्थिरता ही पर्याप्त नहीं है, अपने आप में समता भी पर्याप्त नहीं है। तीसरे तत्व के रूप में अहिंसा को समाज को संगठित करने के तरीके से परिलक्षित करना होगा। शांति के लक्ष्य के साथ अहिंसा एक वास्तविकता बन सकती है।

सभी उदाहरण [वैकल्पिक विकास] हमें अफ्रीकी कहावत की याद दिलाता है कि, 'कितनी भी लंबी यात्रा क्यों न हो, उस पर चलना हमेशा पहले कदम के साथ शुरू होता है।' इन रास्तों पर हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जो एक-दूसरे से लक्ष्य और साधन तय करने के लिए बात करते हैं, जो अधिकारियों से बात करते हैं भले ही वे उनकी नीतियों से असहमत हों, जो अनुचित स्थितियों के लिए प्रतिक्रिया में और साझा मूल्यों सहित स्वतंत्रता के पक्ष में आगे आते हैं। स्वयं, इस दृष्टि से चुनाव करने की क्षमता बढ़ती है कि एक अधिक सहायक और न्यायसंगत दुनिया संभव है।

Kofi A. Annan, quoted in Bertholet et al. (2017): Paths of Human Economy (p. 3). Emerald Publishers, Chennai, India.

धारा III : जय जगत : दृष्टि और मूल्य

जय जगत के लिए जो कार्ययोजना बनाई गई है, वह त्रिस्तरीय रणनीति पर आधारित है : (1) विभिन्न देशों से अहिंसक पदयात्रा की एक श्रृंखला चलेगी, जो सितंबर 2020 में जिनेवा में इकट्ठा होगी, (2) युवा लोगों के बीच बातचीत, और सतत् विकास लक्ष्यों के उचित कार्यान्वयन के माध्यम से वास्तविक बदलाव हासिल करने की पैरवी करने के लिए संयुक्त राष्ट्र निकायों के साथ बातचीत और (3) 25 सितंबर से 3 अक्टूबर 2020 तक जिनेवा में स्थानीय पहलों पर एक आठ दिवसीय सभा का आयोजन करना, जहां लोग वैश्विक परिवर्तन के लिए अपने स्थानीय कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए विकल्प और सर्वोत्तम कार्यवाहियों को साझा कर सकते हैं।

जय जगत की दृष्टि अहिंसा (अहिंसा) की है जो मानव व्यवहार को निर्देशित करती है और प्रेरित करती है। सामाजिक आंदोलनों के लोगों को एक साथ लाने के लिए इसमें प्रोत्साहित किया जाता है ताकि आबादी के सबसे कमजोर वर्गों के लिए परिवर्तन के एजेंडा को साहसपूर्वक बढ़ाया जा सके। यह शक्तिशालियों को भड़काने के लिए नहीं हैं और जितना संभव हो सके विरोध को दूर करने का प्रयास करते हैं। सामाजिक आंदोलन जो अहिंसक हैं, जहां भी संभव हो, बातचीत के लिए खुले हैं। यदि कोई संवाद नहीं है, केवल मांग है, तो आंदोलन उचित नहीं है।

अहिंसा का प्रयोग केवल बाहरी परिवर्तन लाने के लिए नहीं है; यह जीवन का एक तरीका भी है, और इसके लिए व्यक्ति को अपने भीतर की हिंसा को लगातार दूर करना होगा। गांधी के सत्याग्रह ('सत्य बल' के रूप में अनुवादित) का उपयोग बाधाओं को दूर करने और बाहरी परिवर्तन करने के लिए आंतरिक शक्ति खोजने के लिए किया गया था। सामाजिक मामलों के लिए व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी लेना, गांधी की अहिंसा की दृष्टि की आधारशिला है, और यह सामाजिक मूल्यों पर आधारित था जो लोगों को वर्तमान चुनौतियों से निपटने में अपने सामूहिक संकल्प को बनाए रखने में मदद करने के लिए था।

जय जगत का उद्देश्य शिक्षा के संस्थानों में एक तरह से सुधार की शुरूआत करना है, जो वाणिज्यिक और विकासात्मक संस्थाओं को मजबूत करने में संलग्न हैं, जो अहिंसक हैं, और हमारे समाज को संचालित करने वाले सुधार संस्थानों का निर्माण करते हैं। शिक्षा के संबंध में, एक अहिंसक दृष्टिकोण को अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, जहां सामाजिक और व्यक्तिगत नवाचार सीखने के परिणाम निकलते हैं, और जहां सामाजिक मूल्य सीखने का मौका मिलता है, ताकि छात्र

जिम्मेदार नागरिक बन जाएं। शुरुआत में वर्णित ग्रहों के संकट के समाधान की दिशा में यह जिम्मेदार 'वैश्विक' नागरिकों के लिए होगा।

एक अहिंसक अर्थव्यवस्था में उत्पादन और विनिमय शामिल हो सकते हैं, लेकिन कुछ लाभ के लिए उन लोगों के लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए, जो हाशिए पर हैं। बल्कि, यह बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए होना चाहिए (जहां आजीविका के अवसर सबसे बड़ी आबादी के लिए सुलभ हो) और साथ ही स्थानीय उत्पादन जो टिकाऊ है, खासकर यह सुनिश्चित करने के लिए कि संसाधनों को पुनर्जीवित किया जाता है और मानव जीवन के लिए संसाधन को आधार बनाए रखा जाता है।

अहिंसक शासन वह है जहां किसी भी समाज को उसके लक्ष्य के रूप में शांति मिले। इस तरह के शासन का एक संकेत यह है कि क्या एक सरकार के पास रक्षा विभाग के अतिरिक्त शांति विभाग है। शांति पर आधारित समाज का निर्माण सभी सरकारी विभागों, संस्थानों और नीतियों में अहिंसा को मुख्यधारा में शामिल करता है। शिक्षा, अर्थव्यवस्था और राजनीति के सुधार संस्थान प्रमुख हैं। अहिंसक शासन को सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने और सभ्य समाज को फलने-फूलने के लिए लोकतंत्र की भागीदारी को गहरा करने की आवश्यकता है।

शब्द अहिंसा (अहिंसा) अहिंसा के एक प्रकार की ओर इंगित करता है, जो समग्र और एकात्मक है। अहिंसा की ऐसी अवधारणा हिंसा ('हिंसा नहीं 'के अर्थ में) पर एक संदर्भ नहीं है, इसके लिए इसका विपरीत अर्थ नहीं है। जिस प्रकार मानवीय भावना, 'प्रेम' को 'घृणा' द्वारा परिभाषित नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार अहिंसा को भी हिंसा द्वारा परिभाषित नहीं किया जा सकता है। अधिकांश लोग अपने चारों ओर की दुनिया को जिस तरह से देखते हैं, वह इस दृष्टिकोण से है, जो हिंसा के पक्ष में झुका हुआ है।

अहिंसा हमें इस प्रकार के दृष्टिकोण को बदलने और अंतर्संबंधों की सराहना करने की संभावना उपलब्ध कराता है। (प्रकृति के साथ के साथ ही एक दूसरे के साथ)। अपनी स्वयं की छवि के माध्यम से, अहिंसा लोगों को 'आत्म-सही' करने के लिए, स्वयं-जिम्मेदार कार्रवाई करने में सक्षम बनाता है, और संभवतः, कार्रवाई का एक नया पाठ्यक्रम देता है। एक नैतिकता के रूप में अहिंसा का अर्थ है कि दूसरों को घायल करने में किसी की भूमिका के बारे में जागरूक होना, उदाहरण के लिए, किसी दूसरे के श्रम का अपने फायदे के लिए शोषण करना। यह गलता है, इसे ही इस सिद्धांत से बदलना है। आत्म-सुधारात्मक कार्रवाई का मतलब हो सकता है कि सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए किसी की इच्छा को सीमित करना, अधिक से अधिक साझेदारी और देखभाल के लिए एक व्यवहारिक बदलाव करना।

जब परिवार के सदस्यों, व्यापार सहयोगियों के साथ एक हिंसक दृष्टिकोण के साथ सामना करना पड़े, तो पड़ोसियों, दोस्तों या साथी नागरिकों के साथ सुधारात्मक कार्रवाई कर सकते हैं। इसके लिए कम से कम प्रतिरोध के क्षणों में परिवर्तन के लिए रणनीतिक रूप से दबाव डालने के लिए कोई प्रक्रिया खोजने के लिए साथ-साथ रहने की आवश्यकता है।

बायनेरिज को विचार के साथ-साथ कार्रवाई में भी देखा जा सकता है। विचारों के अंतर्संबंधों की सराहना करते प्रकृति के साथ हमारे रिश्ते और एक दूसरे के साथ के व्यवहार को देखना महत्वपूर्ण है।

यह तब और अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है जब सत्ता की विषमता को देखते हैं। हाशिए पर सबसे अधिक हिंसा होती है और उनकी प्रतिक्रिया विभिन्न तरीकों से इसके खिलाफ संघर्ष करना है। अहिंसक आयोजन लोगों को एक सहज दृष्टि से संघर्ष को बनाए रखने का एक तरीका देता है। हाशिए की ओर से पैरवी करने वालों को भी हिंसा का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे मुख्यधारा के विचारों के विपरीत हैं। वे भी अलग-थलग या अलग हो सकते हैं। मुख्यधारा के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा हाशिए के साथ हो रहे अन्याय को देखकर एक गहरी संवेदनशीलता से पुनर्जीवित होती है ।

बहुत लंबे समय तक नकारात्मक कल्पना से प्रेरित होना मुश्किल है। यह वह जगह है जहां 'विरोधी' आंदोलनों की उम्र छोटी होती है। अहिंसा रणनीति से अधिक है। यह एक दृष्टि पर आधारित है जो किसी चीज के लिए है। जय जगत का मेनिफेस्टो शांति के साधन के रूप में न्याय के लिए संघर्ष करना है, लेकिन इसके लिए हमें इस अंतिम परिणाम तक पहुंचने के लिए अहिंसक साधनों को भी अपनाने की आवश्यकता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, गांधी जी ने कहा था, 'साधनों की तुलना बीज से की जा सकती है और उसका अंत एक पेड़ है, और इसका मतलब है कि बीज और पेड़ के बीच एक पवित्र संबंध है।'

एक अहिंसक समाज की दृष्टि ग्रह को एक परिवार के रूप में समझने के लिए संकीर्ण विभाजन और देश की सीमाओं से परे सोचने को प्रेरित करती है। यदि दुनिया भर के अधिक से अधिक लोग अहिंसा में दृढ़ विश्वास विकसित करते हैं, तो सबसे जरूरी मुद्दों को शांतिपूर्ण और उचित तरीकों से हल किया जा सकता है। भले ही औपचारिक फैसलों को संस्थागत स्तर पर बातचीत करनी पड़े, लेकिन सिविल सोसाइटी द्वारा सामाजिक लामबंदी इन फैसलों को प्रभावित कर सकती है और यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि निर्णय लेने में भी अचानक बदलाव सही भावना के साथ और जरूरी आग्रह के साथ लागू हो।

व्यवस्था को जवाबदेह बनाने के लिए, नागरिक समाज को ऐसे विकास के लिए दबाव बनाने की आवश्यकता है जो कुछ के लिए धन की बजाय, सभी के लिए खुशी और भलाई को बढ़ावा देता हो। यह विकास का एक रूप है जो गरीबों और हाशिये पर स्थित लोगों को फिर से केंद्र में रखता है। असामान्य रूप से, इस नए विकास प्रतिमान को आकार देने के लिए गरीबों की भागीदारी की केंद्रीयता आवश्यक है, और इसे एक वास्तविकता में बदलने के लिए भी। यह नहीं है, हालांकि यह उन अभिजात वर्ग के समूहों को बाहर करने के लिए नहीं हैं, जिनके लिए सह परिभाषित मुद्दों की पहचान, सह परिभाषित, सह फैसला और सह कार्यान्वयन नीतियों के अवसर हैं। इसकी वजह से पूरी प्रक्रिया को कम करने आंका जा सकता है, जबकि ऐसा नहीं है। ग्रह के संरक्षण के लिए एक सहभागी विकास की आवश्यकता होगी जिसमें सभी लोग शामिल होंगे।

एकता परिषद, जो कि एक गांधी जी से प्रेरित आंदोलन है और भारत में पिछले 25साल से अहिंसक आंदोलन कर रहा है, से जय जगत का जन्म हुआ है। (www.ektaparishad.in)। साल 2013 से, यह कई देशों में अन्य जमीनी स्तर पर आंदोलनों और नागरिक समाज संगठनों के साथ परामर्श कर रहा है, जो कई प्रकार के कार्रवाइयों को करने के लिए वैश्विक संस्थाओं का ध्यान गरीबी और संघर्ष के 'मूल कारणों' पर लायेगा। (see www.jaijagat2020.org)। इस तरह की बातचीत का एक उदाहरण आदिवासी आबादी का है जो अमीरों द्वारा उनके लाभ के लिए अपनी वन भूमि से खदेड़े जा रहे हैं। भूमि हथियाने से आर्थिक असमानता बढ़ती है और सामाजिक संघर्ष पैदा होता है, लेकिन इसमें जो अधिक सूक्ष्म मुद्दा है, वह पर्यावरण विनाश और जलवायु संकट का खतरा है। आदिवासी लोगों की बुनियादी जरूरतें पर्यावरण संबंधी चिंताओं से नहीं टकराती हैं, बल्कि वे वनों की सुरक्षा के लिए स्थायी समाधान खोजने में सक्षम हैं। यह एक उदाहरण है कि वन-निर्भर समुदाय जलवायु परिवर्तन को कम करने और शांति बनाए रखने के लिए पृथ्वी के संसाधनों की रक्षा करने में कैसे मदद कर सकते हैं।

खंड IV : बदलाव के लिए प्रतिबद्धता कायम रखना

यहां हम जिस ग्रह संबंधी मुद्दे की बात करते हैं, उसका एकमात्र तरीका यह हो सकता है कि लोग पृथ्वी के साथ और एक-दूसरे के साथ अपने संबंधों को बदलने के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को बनाए रखें। आंतरिक परिवर्तन सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण होता है, लेकिन इस परिवर्तन के घटित होने के लिए, आत्म-विचार करना होगा और सामाजिक लक्ष्य के रूप में शांति का एहसास करने की सकारात्मक प्रतिबद्धता के साथ यह करना होगा। ('आप दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं, वह बदलाव खुद में लाएं।) एक व्यक्ति की स्वायत्तता दूसरों के लिए हानिकारक नहीं हो सकती।

किसी भी परिवर्तन का विस्तार किया जा सकता है, खासकर जब कोई व्यक्ति इसे एक ऐसी कार्रवाई से जोड़ता है जो एक अन्यायपूर्ण सामाजिक स्थिति को बदलने के लिए होता है। इससे जबरदस्त व्यक्तिगत विकास होता है। विस्तारक कार्यों के माध्यम से, व्यक्तिगत परिवर्तन को जीवन के सभी रूपों, पृथ्वी और इसकी जीवन-पोषित भूमिका के संरक्षण के साथ बाहरी परिवर्तन की शक्ति लेने के लिए अपनाया जाता है।

जय जगत की दृष्टि व्यक्तिगत, 'स्व' आंतरिक परिवर्तन को बड़े 'बाहरी' सामाजिक परिवर्तन से जोड़ती है, और इसे छह प्रतिबद्धताओं में विभाजित किया जा सकता है : पहला, व्यक्तिगत बदलव के लिए प्रतिबद्धता; दूसरा, पृथ्वी के संदर्भ में जीवन के पोषण की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्धता; तीसरा,

अहिंसक सामाजिक कार्रवाई के लिए प्रतिबद्धता; चौथा, जीवन शैली के प्रति अहिंसा के लिए प्रतिबद्धता; पांचवीं, वैश्विक नागरिकता के लिए प्रतिबद्धता; और छठा, न्याय, मानव अधिकारों और लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता।

इन छह प्रतिबद्धताओं को बदलते मूल्य प्रणालियों पर केंद्रित किया जाता है, और यदि एक दूसरे के संबंध में कल्पना की जाती है, तो एक सामाजिक आधार बनाने में योगदान हो सकता है जो अस्तित्व के विभिन्न मुद्दों को हल करने के लिए तत्काल आवश्यक परिवर्तनों के लिए सार्वजनिक समर्थन को बनाए रखने में मदद करेगा। इसी समय, ये मूल्य प्रणालियां लाखों लोगों के दैनिक जीवन में संकट को कम करने के लिए बहुत ही रचनात्मक और बहुत रचनात्मक तरीकों से मदद करेंगी, और यह सफलता इन मूल्य प्रणालियों को बनाए रखने का आधार प्रदान करेगी। एक बार जब ये मूल्य प्रणालियां एक निश्चित स्तर पर पहुंच जाती हैं, तो उनके पास दैनिक जीवन में संकट को कम करने की क्षमता होगी, और यह अधिक सार्थक, रचनात्मक और गहन, अलग तरीके से संतोषजनक हो जाएगी।

सार्वजनिक समर्थन और कार्रवाई के लिए एक आधार के रूप में ऐसे सामाजिक मूल्यों की अनुपस्थिति में, किसी भी संख्या में तकनीकी नवाचार, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और वित्तीय प्रतिबद्धताएं, चाहे कितनी भी अच्छी तरह के इरादे और यहां तक कि वे आवश्यक हो, उनके खुद को लाने और बनाए रखने में सफल होने की संभावना नहीं है। तत्काल मुद्दों को हल करने के लिए आवश्यक परिवर्तन जरूरी है। इसलिए, यह आशा की जाती है कि जो लोग अभियान में शामिल होना चाहते हैं, वे इन प्रतिबद्धताओं का पालन करेंगे।

व्यक्तिगत बदलाव के लिए प्रतिबद्धता

इसमें आंतरिक आक्रामकता को नियंत्रित करने और जहां भी संभव हो नकारात्मक निर्णयों पर सकारात्मक निर्णयों को प्रतिस्थापित करने का दैनिक अभ्यास शामिल है। संभव करने के लिए खुला और पारदर्शी होना होगा। विपत्ति का सामना करने का आत्मविश्वास होना चाहिए। किसी के व्यवहार को स्वयं ठीक करने में सक्षम होना होगा। गैर-प्रतिक्रियात्मक प्रतिक्रियाओं को हावी होने दें। दूसरों पर हावी नहीं होना सीखना होगा। यह सुनिश्चित करना कि हमारा कोई कार्य दूसरों के लिए हानिकारक नहीं हैं। हिंसा के खिलाफ संघर्ष, विशेष रूप से विषम शक्ति संबंधों में। शांति और न्याय की एक बड़ी दृष्टि के लिए अपने आप को गोद लेना।

पृथ्वी के संदर्भ में जीवन के पोषण की रक्षा के लिए प्रतिबद्धता

पृथ्वी की जीवनदायिनी भूमिका की गारंटी नहीं दी जा सकती है और इसे मानव द्वारा बनाए रखा जाना और संरक्षित करना है। पृथ्वी सिर्फ मनुष्य के लिए नहीं है, बल्कि इस ग्रह पर जीवन के सभी रूपों के लिए है। मानव को एक ऐसा

रास्ता खोजना चाहिए जिसके द्वारा वे अपनी पुनर्जीवी क्षमता को बनाए रखने के लिए जीवन के सभी रूपों की अनुमति देते हैं। पिछले कुछ दशकों के दौरान, लोगों ने उन स्थितियों को बाधित करने और नष्ट करने की एक अभूतपूर्व क्षमता का प्रदर्शन किया है जिन पर हमारा अस्तित्व आधारित है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे विनाशकारी है। इसलिए, पृथ्वी की रक्षा और उसकी जीवनदायिनी भूमिका के लिए प्रतिबद्धता की आज पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है।

प्रकृति और समाज में जीवन और इसकी जीवन शक्ति, पारस्परिकता, सम्मान और मानव एकजुटता के नवीकरण और उत्थान के चक्रों पर आधारित है। मिट्टी और समाज के बीच का संबंध पारस्परिकता पर आधारित है, जो लॉ ऑफ रिटर्न पर, वापस देने पर है। पारिस्थितिक कानून की वापसी पोषक तत्वों और पानी के चक्र को बनाए रखती है, और इसलिए स्थिरता का आधार है। समाज के लिए, रिटर्न ऑफ लॉ न्याय, समानता, लोकतंत्र और शांति सुनिश्चित करने का आधार है।

हालांकि, प्रकृति और समाज से संसाधनों और धन के एक-तरफा उपभोग के आधार पर आर्थिक प्रतिमान ने उत्पादन और उपभोग की प्रणालियों को बढ़ावा दिया है जो प्राकृतिक और सामाजिक दुनिया की स्थिरता को खतरे में डालते हुए इन चक्रों को तोड़-फोड़ दिया है।

V. Shiva (ed.) (2015): Terrra Viva–Our Soil, Our Commons, Our Future: A New Vision for Planetary Citizenship.

अहिंसक सामाजिक कार्रवाइयों के लिए प्रतिबद्धता

अहिंसक सामाजिक कार्रवाई का अभ्यास केवल बाहरी परिवर्तन को लागू करने के लिए नहीं है, यह लगातार अपने भीतर की हिंसा पर काबू पाने के लिए भी है। गांधी के सत्याग्रह ('सत्य बल' के रूप में अनुवादित) का उपयोग आंतरिक शक्ति को खोजने के लिए किया गया था, जो बाधाओं को दूर करने और बाहरी परिवर्तन के लिए स्वयं और बड़े सामाजिक संघर्ष के बीच को संदर्भित करता था। इससे अंतर्संबंध का पता चलता है।

अहिंसक सामाजिक कार्रवाई के लिए प्रतिबद्धता लोगों को एक साथ लाने के लिए साहस के साथ जनसंख्या के सबसे कमजोर वर्गों के परिवर्तन के एजेंडा के लिए दबाव डालना है। इसके साथ ही, हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए कि सत्ता के साथ उन लोगों को भड़काने के लिए नहीं, बल्कि जितना संभव हो सके विरोध को रोकने का काम करें। जहां भी संभव हो, संवाद करने के लिए खुला रहना, और यदि संवाद संभव नहीं है, तो अहिंसक संघर्ष करना।

जीवन शैली के प्रति अहिंसा के लिए प्रतिबद्धता

यह प्रतिबद्धता हमें विचार, शब्द और कर्म में जानबूझकर अहिंसक होने के लिए कहती है। शब्द और कार्य विचार में शुरू होते हैं, और इस प्रकार हमें बोलने से पहले अपने विचारों की जांच करने के अनुशासन को विकसित करने की आवश्यकता होती है। अहिंसक रूप से बोलने के लिए हमें दूसरों की बात सुनने और उनका सम्मान करने की आवश्यकता है, भले ही उनके विचार हमारे खुद से अलग या आलोचनात्मक हों। एक ही वास्तविकता पर अलग-अलग दृष्टिकोण वाले लोग जब एक-दूसरे के मतभेदों की सराहना करते हैं तो वे अधिक अहिंसक होते हैं। अहिंसक कार्रवाई शोषण वाली दुकानों 'में बनाए गए सामान खरीदने से बचने के साथ-साथ अहिंसक विवाद समाधान में संलग्न होने से लेकर कई रूप में हो सकती है। इन सबसे ऊपर, किसी के भाषण और व्यवहार में स्थिरता की मिसाल महत्वपूर्ण है।

वैश्विक नागरिकता के लिए प्रतिबद्धता

वैश्विक नागरिकता का मतलब स्थानीय कार्यों को दुनिया के लोगों द्वारा सामना किए गए मुद्दों के बारे में जागरूकता से जोड़ना है। हमारी तेजी से एकीकृत दुनिया में, हम सभी के लिए वैश्विक संकटों को दूर करने और पृथ्वी और अन्य मनुष्यों के साथ हमारे संबंधों में अधिक स्थिरता, समता और शांति लाने के लिए मिलकर काम करने की जिम्मेदारी है।

वैश्विक नागरिकता का अर्थ है - वैश्विक संस्थाओं को लोगों के प्रति जवाबदेह बनाना। यदि वित्तीय संस्थान एक विशेष विकास के लिए दबाव डाल रहे हैं जो बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन करता है, जो गरीबी पर अंकुश नहीं लगाता है, या संघर्ष को बढ़ाता है, तो वैश्विक नागरिकों को बदलावों के लिए विरोध करना और दबाव डालना होगा। भारत जैसे कुछ पारंपरिक समाज वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा में विश्वास करते हैं, जहां पूरा विश्व एक परिवार है। ऐसी अवधारणाओं के लिए अपील करना सामाजिक जिम्मेदारी बनाने का एक तरीका है।

'परिवार के रूप में विश्व' के लिए प्रतिबद्धता

हमारी दुनिया में सार्वभौमिक परिवार की अवधारणा द्वारा तेजी से निर्देशित और प्रेरित करने की आवश्यकता है, इसका अर्थ है, बिना भेदभाव के साथ पूरी दुनिया के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता। प्रतिबद्धता आमतौर पर राष्ट्र-राज्य के लिए रही है, या धर्म, क्षेत्र, आदि द्वारा निर्देशित की गई है। हालांकि, आज, हमें अपनी दुनिया के लोगों के बीच किसी भी तरह से भेदभाव किए बिना पूरे ब्रह्मांड के लिए व्यापक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। एक परिवार के रूप में ब्रह्मांड के 'मूल मूल्य के विकास के बिना, यह संभावना नहीं दिखाई देती है कि सबसे अधिक गंभीर समस्याओं को हल करना संभव होगा। जब तक दुनिया में अधिकांश लोग संकीर्ण प्रतिबद्धताओं द्वारा निर्देशित होते हैं, गंभीर समस्याओं को हल करने के लिए बातचीत और प्रयास बहुत कम फल देते हैं, और वास्तविक सफलता की संभावना कम से कम होती है, जैसा कि पहले और हाल ही में फिर से साबित हुआ है। दूसरी ओर, जब अधिक से अधिक लोगों को 'परिवार के रूप में ब्रह्मांड' की अवधारणा द्वारा निर्देशित किया जाता है, तो गंभीर वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए कई बेहतर संभावनाएं मिल जाती हैं।

Bharat Dogra: Contribution to the Jai Jagat Manifesto.

न्याय, मानवाधिकार और लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्धता

न्याय के बिना शांति बनाए रखने की संभावना नहीं है। न्याय का मतलब है कि लोगों की शिकायतों और मानवाधिकारों पर ध्यान दिया जा रहा है। जहां लोगों की गरिमा छीन ली गई है या उनकी आजीविका का साधन छीन लिया गया है, वहां संघर्ष होना तय है। इसका मुकाबला करने का एकमात्र तरीका लोगों के मानवाधिकारों की रक्षा करना, लोगों की शिकायतों को सुनना और उनका समाधान करना है। साथ ही, लोकतांत्रिक संस्थाओं को और अधिक सहभागी बनाने के लिए उनमें सुधार लाने की प्रतिबद्धता भी आवश्यक है। बड़े वैश्विक मुद्दों को अधिक जिम्मेदारी के साथ निपटाएं।

खंड V: बदलाव के लिए आयोजन

इस खंड में हम अहिंसक सामाजिक संगठनों के निर्माण को देखते हैं। ये समूह, आंदोलन, नेटवर्क या कार्य हो सकते हैं। ग्रासरूट यानी जमीनी समूह जो स्थानीय सामाजिक नवाचार और आजीविका पर आधारित हैं, जैसे कि महिलाओं के लिए कई आय-उत्पादक पहल, ने पिछले दो दशकों में स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में एक बड़ा प्रभाव डाला है।

क्या समूहों, आंदोलनों, नेटवर्क या कार्यों को जमीनी स्तर पर जोड़ने का काम युवाओं और महिलाओं को शामिल करके और नेतृत्व प्रशिक्षण के माध्यम से किया जा सकता है? सामुदायिक जुड़ाव, सामुदायिक नेतृत्व और समुदाय-आधारित कार्रवाई किसी भी 'नीचे से ऊपर' वाले मॉडल पर परिवर्तन के लिए आधार हैं। अहिंसक सामाजिक आंदोलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं जब सत्ता की विषमता होती है। साथ ही,

संघर्ष के साथ बातचीत व्यापक नीतिगत बदलाव को आगे बढ़ाने का एक तरीका है। यह रचनात्मक काम के साथ संभव है।

युवाओं को जोड़ना

अनौपचारिक प्रशिक्षण की मदद से युवा पुरुषों और महिलाओं को जो अन्याय वे देखते हैं, उनके खिलाफ खड़े होने के लिए अपने आंतरिक शक्ति का पता लगाने में मदद मिलती है। इसे औपचारिक रूप से स्कूलों या कॉलेजों के औपचारिक पाठ्यक्रम से हासिल करना मुश्किल है, क्योंकि औपचारिक शिक्षा रोजगार के लिए और एक यथास्थिति का पालन करने के लिए है जो गहरी संरचनात्मक समस्याओं से निपटने का प्रयास नहीं करती है। युवा लोगों को एक तरफ हाशिए व गरीबी और दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से अवगत कराया गया, यह उनके अनुभवात्मक सीखने का आधार बन गया।

युवाओं को हाशिये के लोगों की ओर से सीधे पैरवी करने के लिए कुछ प्रकार की कार्रवाई करने और आयोजन की दिशा में काम करने के लिए राजी किया जाता है। इस प्रक्रिया में, वे सीखते हैं कि उनके समुदाय के कई लोग अनजाने में गरीबी और असमानता का सामना कर रहे हैं। उन्हें मुख्य धारा का बचाव करना बंद कर देना चाहिए और एक परिवर्तन प्रक्रिया के लिए खुद को हाशिए पर रख देना चाहिए जो दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए कुछ के लिए हानिकारक नहीं है। इसके बजाय, वे इस बात का उदाहरण दे सकते हैं कि अहिंसक सामाजिक परिवर्तन, पूर्व की कार्यप्रणाली से एक प्रस्थान है जिसमें बदलाव को मजबूर करना है।

जब युवा स्थानीय-से-वैश्विक संबंधों को समझने के लिए एक साथ आते हैं, और ये उनके लिए अलग तरह से कार्य करने का आधार बन जाते हैं, तो यह राजनीतिक संस्कृति को बदल देता है।

फ्रांस में अल्टरनेटिबा

2018 में चार महीनों के लिए, अल्टरनेटिबा बाइक टूर ने जलवायु न्याय के संघर्ष के हिस्से के रूप में लगभग 5,800 किलोमीटर की दूरी तय की। यह युवा लोगों द्वारा संचालित किया गया था, और फ्रांसीसी नागरिक समाज संगठनों द्वारा आयोजित एक लोकप्रिय कार्यक्रम था, जिसमें अल्टरनेटिबा, फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ और एएनवी-सीओपी 21 शामिल थे। इकतालीस साझेदार, समुदाय और स्वैच्छिक संगठनों ने एकजुटता से इस दौरे के समर्थन का वादा किया।

यह दौरा 9 जून को पेरिस से शुरू हुआ और 6 अक्टूबर को बेयोन पहुंचा। फ्रांस और इसके पड़ोसी देशों में रास्ते में दो सौ स्टॉप की योजना बनाई गई थी। तीन और चार-सीटर बाइक, आंदोलन की सामूहिक ताकत के प्रतीक टूलूज़, ग्रेनोबल और नैनटेस जैसे बड़े शहरों में बंद हो गए, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों और प्रतिरोध के प्रतिष्ठित स्थानों में आयोजित हुए, अंत में बेयोन में पहुंचे। उन्होंने जय जगत आंदोलन को भी बढ़ावा दिया।

https://alternatiba.eu/en/2017/11/alternatiba-tour-back/

युवा प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास

सामाजिक बदलाव के आयोजनों के लिए युवा प्रशिक्षण और नेतृत्व महत्वपूर्ण है। व्यापक समाज की जरूरतों को समझने के लिए और जमीनी स्तर पर आधारित नेतृत्व और 'नीचे से ऊपर' के विकास को बढ़ावा देने के लिए या तो औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। भारत में गो-रुर्बन के उदाहरण में बहुत से बदलाव नए प्रकार के विकास नवाचारों के निर्माण के रूप में हुए हैं, जहां छोटे पैमाने पर खेती के माध्यम से खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने के लिए मजबूत ग्रामीण समुदायों के निर्माण के पक्ष में शहरी पूर्वाग्रह को हटा दिया जाता है।

भारत में गो रुर्बन

यह मध्य भारत में एक युवा प्रयोग है जो शहरी और ग्रामीण युवाओं को एक साथ एक सप्ताह के लिए ग्राम जीवन में भाग लेने के लिए लाता है। अक्सर, शहरी लोगों को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत कम एक्सपोज़र होता है, और जब उन्हें इसकी झलक मिलती है, तो वे अपने देश के बारे में अपनी अज्ञानता से चौंक जाते हैं। इन शिविरों का उद्देश्य जड़ों को मजबूत करना है क्योंकि जीवन शैली के बीच की खाई को भी पाटना है। यह अहिंसा और शांति के संदर्भ में किया जाता है।
जैसे-जैसे युवा मंच विकसित हुआ, उन्होंने भारत और एशिया में, दोनों में एक बड़ी नेतृत्व भूमिका निभानी शुरू कर दी । इसने सोशल मीडिया के माध्यम से विस्तार किया है और युवाओं की एक विस्तृत संख्या को जोड़ने का काम किया है।

गो-रुर्बन इंडिया : https://twitter.com/gorurban?lang=en

महिला प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास

सामाजिक परिवर्तन के लिए महिलाओं का प्रशिक्षण और नेतृत्व महत्वपूर्ण कामों में से एक है। दुनिया भर के कई देशों में स्व-सहायता समूहों का प्रसार विकास में महिलाओं के नेतृत्व की भूमिका के लिए एक वसीयतनामा है। महिलाओं में आम तौर पर कम गतिशीलता होती है, लेकिन जब उनके और उनके परिवारों के लिए अवसर खुलते हैं, तो वे आगे बढ़ने की संभावना रखती हैं। वे समूहों के भीतर भी अधिक सहज हैं।

समुदाय को संगठित करना

हाशिए के समुदायों के बीच संगठित समुदाय का उद्देश्य सामुदायिक कार्रवाई को अधिक सुविधाजनक बनाना है। सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण के साथ-साथ, अहिंसक प्रशिक्षण भी था। ऐसा इसलिए था कि विषम शक्ति संबंधों में लोग अपने संघर्ष को बनाए रखने और संबंधित हितधारकों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने में सक्षम हैं।

1. सामुदायिक स्वीकृति प्राप्त करना

चाहे कार्यकर्ता अंदरूनी व्यक्ति हो या बाहरी लोग, उन्हें किसी भी प्रकार के कार्य को करने के लिए समुदाय (समूह) की स्वीकृति की आवश्यकता होगी। वे स्थानीय लोगों, का विश्वास हासिल करने के लिए विभिन्न प्रकार के हस्तक्षेप का उपयोग कर सकते हैं, जैसे - स्वास्थ्य कार्यक्रम, युवा समूह, महिलाओं के आयोजन आदि।

बोस्निया में ब्राटुनैक की महिलाओं का फोरम

यह एक महिला संगठन था, जो उन लोगों के लिए स्थापित किया गया था जो विस्थापित हो गए थे और बाद में सर्बिया और बोस्निया-हर्ज़ोगिविना की सीमा के क्षेत्र में 1990 के दशक के गृह युद्ध के बाद वापस लौट आए। छोटे फल, विशेष रूप से रसभरी उगाने के लिए एक सहकारी निर्माण करके आर्थिक गतिविधि करना, न केवल उन्हें आजीविका प्रदान की, बल्कि महिलाओं के लिए विभिन्न स्थानीय जातीय समूहों को एक साथ लाने का एक तरीका प्रदान किया।

2. सामुदायिक नेतृत्व का निर्माण

सामुदायिक नेतृत्व का लक्ष्य उस प्रकार की क्षमता निर्माण पर काम करना है जो स्थानीय लोगों को नेतृत्व लेने के लिए सशक्त बनाए। आवश्यकता पड़ने पर युवा उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान करते हैं। सामुदायिक नेताओं को 'मेरे मुद्दे' को 'हमारे मुद्दे' में बदल कर संघर्ष के लिए एकजुटता और अहिंसक प्रतिक्रियाओं का निर्माण करने और अपनी कार्रवाई के परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहने में सक्षम होने के लिए आयोजन की एक अच्छी समझ की आवश्यकता है।

3. सामुदायिक कार्रवाई के लिए तैयारी

समुदाय को उनके मुद्दों को संबोधित करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार संगठित करना महत्वपूर्ण है, चाहे वे मामूली या प्रमुख हों। स्थिति को देखते हुए समुदाय को सशक्त बनाने में कई कदम शामिल हैं। आम तौर पर यह कार्रवाई करने के लिए उनकी प्रेरणा से संबंधित है, जिस हद तक लोग प्रतिरोध करेंगे, कार्रवाई के माध्यम से आगे ले जाने की उनकी तत्परता होगी और यह अहसास कि अगर लोग एक साथ काम करते हैं, तो परिवर्तन किया जा सकता है। इससे लोगों को यह समझने में मदद मिलती है कि वे दूसरे समूह के संघर्ष में मदद कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि कार्रवाई अहिंसक बनी रहे और साधन भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

4. सामुदायिक कार्रवाई को अंजाम देना

यह उन जीवन स्थितियों को बदलना है जिसमें लोग रहते हैं, इस ज्ञान के साथ कि परिवर्तन केवल बाहर से ही नहीं, बल्कि भीतर से भी किए जाने हैं। संघर्ष, संवाद या रचनात्मक कार्य का आयोजन करते समय कई चरणों को सावधानीपूर्वक तैयार करना और समझना पड़ता है।

महिला और शांति तालिका (पीस टेबल)

शांति तालिका महिलाओं को संगठित करने का एक अनूठा तरीका है। यह अनूठा विचार फिलीपींस में शुरू हुआ और कई देशों में फैल गया। जो महिलाएं संघर्ष क्षेत्रों में शांति तालिका बनाती हैं, वे गरीब, हाशिए पर और अधीनस्थ हैं, और असीम रूप से पीड़ित हैं। जब वे एक साथ मिलती हैं और अपने नेतृत्व कौशल पर एक साथ काम करती हैं तो महिलाएं जबरदस्त लचीलापन दिखाती हैं। अक्सर वे अपने आसपास के लोगों का उत्थान करने में सक्षम होती हैं। यह पहल शांति की खोज में महिलाओं की आवाज़ को बढ़ाने के लिए जय जगत के साथ मिलकर काम कर रही है।

#Womenseriously

एनएएफएसओ

यह श्रीलंका में मछुआरों का एक संगठन है। 2009 में श्रीलंका में गृह युद्ध समाप्त होने के बाद महिलाओं की कठिनाइयों के जवाब में इसका गठन किया गया था, साथ ही आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के घर लौटने के मुद्दे का समाधान खोजने के लिए भी। स्व-सहायता समूहों का गठन करके, जिन्होंने उन्हें आय-अर्जन की छोटी-छोटी गतिविधियां करने की अनुमति दी, उन्होंने सरकार, पत्रकारों और अन्य लोगों से निपटने के लिए कुछ आर्थिक स्वतंत्रता और अपने स्वयं के सशक्तिकरण की भावना हासिल की। इस प्रक्रिया में, उन्होंने सीखा कि अधिक शांति प्राप्त करने के लिए अपनी स्थिति को मध्यस्थ कैसे बनाया जाए।

अहिंसक सामाजिक आंदोलन का विकास करना

छोटे अभियानों को बड़े अभियानों में तब्दील करने के लिए एकजुटता या गठबंधन निर्माण की आवश्यकता होती है। पद यात्रा समूहों को जोड़ने की एक विधि है। बड़े पैमाने पर अहिंसापूर्वक किए गए कार्य विभिन्न एकजुटता कार्यों के साथ पूर्ण होते हैं। एकजुटता बनाने का एक मुख्य तरीका दूसरों को बातचीत में लाना है। इस प्रकार, कार्रवाई के भीतर के लोगों को बाहर देखने वाले लोगों के माध्यम से वैधता की भावना प्राप्त होती है। एकजुटता भारत में और बाहर अन्य सामाजिक आंदोलन समूहों में भी थी।

समय के साथ बड़े कार्यों का निर्माण होता है, स्थानीय कार्रवाई से शुरू होता है और कार्रवाई के बड़े रूपों को शामिल करने के लिए यह बाहर की ओर बढ़ता है। इस प्रक्रिया में, जमीनी स्तर के लोग इन बड़े कार्यों को आसानी से करना सीखते हैं, और इस तरह से कि वे कार्रवाई के प्रमुख बने रहें।

राज्य अधिकारियों के साथ संघर्ष की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि कार्रवाई अधिक व्यापक हो जाती है, और यही वह जगह है जहां अहिंसक प्रतिक्रियाओं में प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। अनुशासन बनाए रखने और सामाजिक घटनाओं को पटरी से उतारने की छोटी घटनाओं की अनुमति नहीं देने के लिए एक लंबी दूरी के दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो कार्रवाई को पूरा करने की कोशिश कर रहा है।

कार्रवाई के लिए तैयारी महत्वपूर्ण है। लंबे पैदल मार्च के मामले में, मार्ग की तैयारी, स्थानीय लोगों को सूचित करना और उनकी भागीदारी प्राप्त करना सबसे महत्वपूर्ण है। यह भी महत्वपूर्ण है कि मीडिया, राजनीतिक नेताओं और नौकरशाहों को उन शिकायतों के बारे में पता हो, जो कि इस समझौते के साथ लाई जा रही हैं कि अन्याय के बारे में शिकायतें वैध हैं।

भरोसेमंद होना भी जरूरी है। इसका अर्थ है नेतृत्व द्वारा किए गए सार्वजनिक बयानों के माध्यम से कार्रवाई की अहिंसा की विश्वसनीयता को बनाए रखना, और जरूरत पड़ने पर योजनाओं को संशोधित करने का लचीलापन भी होना चाहिए।

Poor People's Campaign

A NATIONAL CALL for MORAL REVIVAL

गरीब लोगों का अभियान : मोरल रिवाइवल (नैतिक पुनरुत्थान) के लिए एक राष्ट्रीय अभियान

मार्टिन लूथर किंग जूनियर की हत्या की 50 वीं वर्षगांठ से प्रेरित, गरीब लोगों के अभियान ने नस्लवाद, गरीबी, युद्ध की अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिक तबाही और देश की विकृत नैतिकता को चुनौती देने के लिए संयुक्त राज्य में हजारों लोगों को एकजुट किया।

यह एक ऐसा आंदोलन है जो कई अलग-अलग मुद्दों को जोड़ता है जो लोगों को पानी की कमी, प्रदूषण, खनन के प्रभाव, बेघर, गुणवत्ता वाले भोजन की कमी, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार तक पहुंच सहित कई मुद्दों से जोड़ता है।

https://www.poorpeoplescampaign.org/

एकजुटता का निर्माण

परिवर्तन के विभिन्न रास्तों में से किसी भी एक कार्रवाई में अधिक से अधिक लोगों को संलग्न करना है। अक्सर सामाजिक परिवर्तन की सफलता, विशेष रूप से बड़े सामाजिक परिवर्तन की, वह स्थिति है जिसके लिए एकजुटता एक बड़ी संख्या में लोगों के बीच निर्मित होती है जो एक कार्रवाई का समर्थन करते हैं।

राज्य के साथ संवाद

सामूहिक संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक स्वीकृति प्राप्त करना महत्वपूर्ण है; यह महत्वपूर्ण है कि साधन और क्रिया अहिंसक रहे। इसे अक्सर 'संघर्ष-संवाद' प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। कुछ राजनेता (भारत में) संवाद सुनते हैं, भले ही पैरवी कितनी भी अच्छी क्यों न हो, जब तक लोगों की शक्ति मौजूद नहीं है, यह संभव नहीं है। साथ ही, बिना संवाद के संघर्ष सरकार को बिना किसी माध्यम के कार्रवाई के लिए छोड़ देता है। अहिंसक कार्रवाई में सभी संवाद जमीनी स्तर पर रहने वाले सत्ता के सिद्धांत से समझौता किए बिना एक नीतिगत संदर्भ में तैयार किए जाते हैं।

संवाद के लिए जनता, मीडिया और राजनीतिक प्रतिनिधियों के साथ अधिकारियों के साथ बातचीत करने के लिए एक निश्चित मात्रा में क्षमता की आवश्यकता होती है। इसमें नीति प्रक्रियाओं से संबंधित शिकायतों को जोड़ना और निर्वाचन क्षेत्र की ओर से पैरवी करना शामिल है।

2019 का दूसरा विश्व मार्च

दूसरा विश्व मार्च शांति के लिए दुनिया भर के समुदायों को एक साथ लाने का एक प्रयास है। पहला विश्व मार्च 2009 में था और चार महीनों में, 50 देशों में शांतिपूर्ण समुदायों के निर्वाचन क्षेत्रों का निर्माण करने में कामयाब रहा। 2019 का मार्च एक समान लेकिन लंबी यात्रा की योजना बना रहा है। यह भारत में जय जगत मार्च के साथ जुड़ जाएगा।

https://www.pressenza.com/2018/11/the-2nd-world-march-for-peace-and-nonviolence-let-people-be-inspired/

रचनात्मक कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण

स्थिरता, समता और शांति हासिल करने के लिए विभिन्न समूहों द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम मध्यम एवं स्थानीय स्तर की गतिविधियां हैं। चुनौती उन्हें दस्तावेजीकरण करने की है ताकि लोग कई नवाचारों से अवगत हो सकें। यह विभिन्न संगठनों द्वारा किया गया है। उनमें से एक भारत का संगठन 'विकल संगम' है, जिसने कई मामलों और ह्यूमन स्टोरीज को एकत्र किया है।

'विकल संगम' या 'अल्टरनेटिव्स कॉन्फ्लुएंस'

सामाजिक और आर्थिक समता के लिए संघर्ष की स्थिरता को लेकर शहरी और ग्रामीण इलाकों में आंदोलन की जमीन को पुनर्जीवित करने से लेकर, विकेंद्रीकृत शासन और निर्माता-उपभोक्ता आंदोलनों के लिए पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील तरीकों में बुनियादी जरूरतों को पूरा करने को लेकर भारत भर में जमीनी स्तर और नीतिगत पहलों की एक बहुतायत है।

वेबसाइट पर प्रदर्शित वैकल्पिक पहल व्यावहारिक गतिविधियां, नीतियां, प्रक्रियाएं, प्रौद्योगिकियां और अवधारणाएं/ रूपरेखाएं हैं। ये समुदायों, सरकार, नागरिक समाज संगठनों, व्यक्तियों द्वारा प्रस्तावित / प्रचारित हैं। इनकी मुख्य विशेषताएं हैं :

1. पारिस्थितिक स्थिरता, जिसमें प्रकृति (पारिस्थितिक तंत्र, प्रजातियां, कार्य, चक्र) का संरक्षण और इसकी लचीलापन शामिल है।
2. सामाजिक कल्याण और न्याय, जिसमें भौतिक और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार और जिम्मेदारियों के साथ-साथ भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन को पूरा करना और शामिल है।
3. प्रत्यक्ष लोकतंत्र को बढ़ावा, जहां निर्णय लेना मानव बंदोबस्त की सबसे छोटी इकाई पर शुरू होता है, जिसमें प्रत्येक मानव को भाग लेने का अधिकार, क्षमता और अवसर होता है, और इस इकाई से लेकर शासन के बड़े स्तर तक निर्माण होता है जो नीचे की ओर जवाबदेह होते हैं।
4. आर्थिक लोकतंत्र, जिसमें स्थानीय समुदायों (उत्पादकों और उपभोक्ताओं सहित, अक्सर एक के रूप में संयुक्त) का उत्पादन, वितरण, विनिमय, बाजारों के साधनों पर नियंत्रण होता है, जहां स्थानीयकरण एक प्रमुख सिद्धांत है और उस पर बड़ा व्यापार और विनिमय बनाया गया है।

http://www.vikalpsangam.org/

माउंट किलिमंजारो महिला वॉक : भूमि अधिकारों पर सरकारों के साथ बातचीत

अफ्रीकी महाद्वीप के हजारों महिलाओं ने तंजानिया में माउंट किलिमंजारो पर्वत पर तीन दिन की कार्रवाई के लिए भूमि अधिकार की मांग की। कुछ महिलाओं ने पर्वत तक पहुंचकर, शिखर तक गई।

सोशल मीडिया अभियान #Women2Kilimanjaro के पीछे होने के कारण, महिलाओं ने मांग की कि सरकारें भूमि अधिकारों तक पहुंचने में आने वाली बाधाओं, जैसे कि जल्दी शादी, सूचना के लिए कमजोर पहुंच और अनुचित प्रथाओं को ख़त्म करने के लिए कानून और नीतियां लागू करे।

महाद्वीप में 80 प्रतिशत कृषि उत्पादन के लिए महिलाएं जिम्मेदार हैं, लेकिन उनके पास केवल 1 प्रतिशत भूमि है, एक समस्या जो औपनिवेशिक युग से जड़ें जमाये है।

एक चार्टर का मसौदा तैयार किया गया था जो इन मांगों के कार्यान्वयन के लिए संयुक्त राष्ट्र, अफ्रीकी संघ और अफ्रीकी ग्रामीण महिला सभा को प्रस्तुत किया गया। बैठक से पहले याचिका दायर की गई।

खंड VI: महात्मा गांधी और जय जगत

जय जगत ने गांधी जी की उनकी मृत्यु से पहले तक उनके द्वारा किए गए विभिन्न आंदोलनों से प्रेरणा प्राप्त की है। 'जय जगत' (सभी लोगों को प्रणाम) का नारा गांधी के एक शिष्य विनोबा भावे ने दिया था। इस शब्द के साथ उन्होंने स्पष्ट किया कि सभी लोग वैश्विक नागरिक हैं (एक सार्वभौमिक परिवार का हिस्सा होने के अर्थ में) और प्रत्येक विशेष स्थान से, वे पूरी मानवता को देखने की क्षमता रखते हैं। वे यह जानते हुए भी कि वे किसी बड़ी चीज का हिस्सा हैं, अपनी मानवीयता की भावना प्राप्त करते हैं। यह उन लोगों की प्रतिक्रियाओं की तुलना में हो सकता है जब वे अंतरिक्ष से पृथ्वी ग्रह की तस्वीर देखते हैं।

गांधी ने अहिंसा की तीन अवधारणाओं को जन्म दिया था, जो जय जगत के लिए केंद्रीय हैं : सत्याग्रह (हिंसा के खिलाफ भीतरी/ बाहरी संघर्ष); स्वराज (व्यक्तिगत रूप से या समाज में किसी के मामलों को व्यवस्थित करना); और सर्वोदय (एक संपूर्ण का व्यक्तिगत हिस्सा होने की जिम्मेदारी की भावना)। इन तीनों अवधारणाओं के बारे में जो दिलचस्प है वह यह है कि वे व्यक्तिगत रूप से और साथ ही सामूहिक रूप से समुदाय पर भी समान रूप से लागू होते हैं। इसका मतलब है कि विभिन्न प्रकार के समुदायों में स्वायत्त व्यक्तियों के रूप में रहने में सक्षम लोगों के बिना, शांति प्राप्त करना मुश्किल होगा।

गांधी ने अपना जीवन ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुए बिताया। उन्होंने यह नहीं माना कि एक स्वतंत्र भारत आवश्यक रूप से अहिंसक रहने वाला था, और इस कारण से, उन्होंने कांग्रेस पार्टी को भंग करने और नेताओं को देश के विकास में सहायता करने के लिए गांवों में लौटने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एक मजबूत नागरिक समाज राज्य को जवाबदेह बना सकता है, इस प्रकार हिंसा को कम कर सकता है।

सर्वोदय आंदोलन एक नागरिक समाज आंदोलन था, और एक पीढ़ी से अधिक के अपने काम से पता चला कि नीचे से ऊपर का शासन संभव है, खासकर अगर नेता कार्यकर्ता बन जाते हैं और लोगों के करीब होते हैं। यह आंदोलन लोकतांत्रिक ताने-बाने के निर्माण का एक हिस्सा था जैसा कि हम आज जानते हैं, और कई संस्थानों के साथ-साथ सामाजिक संगठनों में भी अहिंसा का बीजारोपण हुआ।

संस्थानों में अहिंसा भी स्वराज की अवधारणा का परिणाम थी। गांधी ने परिकल्पना की थी कि समाज को संगठित करने का एक तरीका है, जिसमें कई लोग शामिल हैं, जो कि स्वायत्तता की भावना पर आधारित था और अपने आप को और दूसरों के लिए ज़िम्मेदारी लेने, व्यक्तिवाद या अराजकता से अलग था। उन्होंने स्थानीय स्व-शासन, माल के स्थानीय उत्पादन और स्थानीय संस्कृति से एक अहिंसक तरीके से निर्माण करने पर जोर दिया, जो दूसरों को घायल नहीं करेगा। इसका मतलब यह था कि कोई भी इलाके अलग-अलग इलाकों के बड़े समाज का एक अभिन्न हिस्सा था, जिसके लिए एक सरकार आवश्यक थी।

समाज को कैसे संगठित किया जाए, इस पर दृष्टि रखने के अलावा, स्वराज भी जमीनी स्तर पर लोगों की जरूरतों के प्रति अधिक संवेदनशील होने के लिए सुधार करने वाली संस्थाओं का एक तरीका था। उदाहरण के लिए, विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन के दौरान 1950 और 1960 के दशक में भूमि संबंधों को बराबर करने के लिए भूमि सुधार के लिए काम किया। यह ग्रामीण विकास से जुड़ी सभी संस्थाओं में सुधार का हिस्सा था।

गांधी को उनके विचारों के प्रतिरोध के बारे में पता था क्योंकि वे यथास्थिति को बाधित करते थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सत्याग्रह की विधि का उपयोग किया था। यह एक आंतरिक विश्वास पर आधारित है कि यदि संघर्ष है, तो लोग परिणाम भुगतने को तैयार होंगे। इस विश्वास को बनाए रखने के लिए आंतरिक शक्ति चाहिए।

यद्यपि गांधी के सत्याग्रह की पद्धति का उपयोग दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई अहिंसक स्वतंत्रता संघर्षों में किया गया था, यह त्याग का एक कार्य है। हालांकि यह उन लोगों के नैतिक विवेक के लिए अपील करने का एक तरीका है जो परिणाम की परवाह किए बिना संघर्ष का लक्ष्य रखते हैं। गांधी गहराई से मानते थे कि अहिंसक कार्य व्यक्तिगत मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त करने का एक तरीका है।

इन तीन अवधारणाओं ने गांधी से जुड़ी राजनीतिक संस्कृति का गठन किया और इसे मूल्य के ढांचे के साथ जोड़ा गया। गांधी का मानना था कि सामान्य मूल्यों की सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त करना संभव है। नीचे दिए गए बॉक्स में शांति के अन्य दृष्टिकोण हैं।

मुहम्मद के बारे में गांधी जी का कहना है : 'मैं उस इंसान के जीवन का सर्वश्रेष्ठ जानना चाहता था जो आज के मानव जाति के लाखों लोगों के दिलों पर एक निर्विवाद रूप से विराजमान है। मैं पहले से कहीं अधिक आश्वस्त हो गया कि यह तलवार नहीं थी जिसने जीवन की योजना में उन दिनों इस्लाम के लिए लोगों के दिल को जीता था। यह कठोर सादगी थी, पैगंबर की पूरी आत्म-प्रतिष्ठा, प्रतिज्ञाओं के लिए निष्ठुर संबंध, अपने मित्रों और अनुयायियों के प्रति उनकी गहन भक्ति, उनकी असहिष्णुता, उनकी निडरता, ईश्वर में और अपने मिशन में पूर्ण विश्वास । ये नहीं कि तलवार से सब कुछ किया और हर बाधा को पार किया।'

खंड VII : अहिंसा के साथ शिक्षा सुधार

अगर हम समाज को और अधिक अहिंसक बनना चाहते हैं, तो हम शिक्षा में सुधार पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करना होगा। शिक्षा और अहिंसा के बारे में गांधी के दृष्टिकोण पर कुछ ध्यान दिया जाता है, इसके बाद कक्षा में अहिंसा की प्रथाओं का एक समकालीन उदाहरण दिया जाता है।

यदि अहिंसा को एक बच्चे के निर्माण का हिस्सा बनना है ('सीडिंग शांति'), तो इसे प्राथमिक शिक्षा के भीतर, सीखने की प्रक्रिया और सिखाई गई विषयवस्तु दोनों के संदर्भ में एकीकृत किया जाना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा में इस सीखने पर निर्माण के लिए सक्रिय समस्या को हल करने की आवश्यकता होती है। कई स्कूलों और कॉलेजों और अन्य समुदाय-आधारित कार्यक्रमों में पाया जाने वाला सेवा शिक्षण, उस वातावरण को प्रदान करता है जिसमें एक छात्र यह देख सकता है कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। सभी विद्यालयों में शांति की मुख्यधारा बनाने में शिक्षक शिक्षा का विशेष स्थान है। उच्च शिक्षा विभिन्न विषयों में क्रॉस-कटिंग थीम के रूप में अहिंसा ला सकती है, और यह स्पष्ट कर सकती है कि हिंसा अक्सर एक निर्विवाद धारणा है। यह गहरी महामारी विज्ञान के मुद्दों को भी उठाएगा कि बाइनरी सोच कैसे निष्कर्ष की ओर ले जाती है जो शांति और सद्भाव को बढ़ावा नहीं देते हैं। ज्ञान उत्पादन उतना ही होना चाहिए जितना कि शांति से जीना सीखें क्योंकि यह जीवन जीने के लिए है।

संघर्ष समाधान की कई तकनीकें हैं। उदाहरण के लिए, 'अहिंसात्मक संचार', जहां एक व्यक्ति पारस्परिक संघर्ष की संकीर्ण स्थिति से हटकर एक बड़ा साझा हित स्थापित करता है। अहिंसक संचार भी संघर्ष के विस्तार के बजाय न्यूनतम करने के बारे में है; उदाहरण के लिए, लोगों को एक सकारात्मक आत्म-छवि प्राप्त करने के लिए एक अंतर को अतिरंजित नहीं करने में मदद करना। प्रशिक्षित तृतीय पक्ष का उपयोग करने वाली मध्यस्थता और मध्यस्थता तकनीक भी आम हैं, हालांकि ये दोनों तब ही उपयोगी होते हैं जब किसी संघर्ष में दोनों पक्षों ने बदलाव के लिए आवश्यक कदम उठाने की कोशिश की हो।

हालांकि ये प्रत्येक संभावित उपयोगी तकनीक हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति दैनिक आदतों में अधिक अहिंसक हो रहा है। इसके लिए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो विचार, शब्द और विलेख में अहिंसा में भाग लेता है - और यहां प्राथमिक से उच्चतर-माध्यमिक तक की शिक्षा में एकीकृत अहिंसा की आवश्यकता है।

छात्रों के साथ गांधी का काम और नई तालीम की शिक्षा

गांधी के छात्रों और विशेष रूप से 1920 से 1929 के बीच उनकी बातचीत पर चयनित लेखन, स्वतंत्रता के लिए लामबंदी किए जाने के बाद लिखा गया था। फिर भी, इस तरह की शिक्षा न केवल ब्रिटिश शासन से आज़ादी के लिए एक अहिंसक स्वतंत्रता संघर्ष की कल्पना करने के लिए राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में छात्रों के संकल्प को मजबूत करने के लिए थी; बल्कि इसने नागरिकों के लिए शिक्षा का निर्माण किया जो कि सर्वोदय के सिद्धांत के आधार पर एक अहिंसक समाज का निर्माण करने के लिए था। जोर असीमित सीखने पर नहीं था, लेकिन चरित्र निर्माण करने वालों को व्यवस्था द्वारा हाशिए पर किये गए लोगों के साथ खड़े होने में सक्षम होने के लिए था।

नई तालीम शिक्षा की कल्पना 1937 में की गई थी, जो दो समरूप रूप से विपरीत हस्तक्षेपों के रूप में प्रकट हुई थी: प्राथमिक शिक्षा के निर्देश के रूप में हस्तकला पेश करना; और बच्चे के तात्कालिक रिश्तों का उपयोग करके एक अधिक सामान्यीकृत शिक्षा को अतिरिक्त रूप देना। यह उस समय ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के विपरीत अनुभव के साथ सीखने को जोड़ने का एक प्रयास था।

एक अच्छा कारीगर होने के नाते और एक अच्छे कपड़े बनाने की तकनीक में महारत हासिल करने के साथ-साथ एक सीखने की प्रक्रिया का विस्तार किया जा सकता है। व्यावहारिक रूप से भी, शिल्प में प्रशिक्षण आत्मनिर्भरता का निर्माण करता है और बच्चा परिवार के लिए एक संपत्ति बनकर, खुद का समर्थन करना सीख सकता है। इस तरह, श्रम का मूल्य बेहतर होगा, न कि वंचितों और गरीबों के वशीकरण के रूप में श्रम का मूल्य तय किया जाएगा।

कनाडाई शिक्षक जिसने अपनी कक्षाओं में अहिंसा की पद्धति को अपनाया

एडमॉन्टन (अल्बर्टा) और पील (ओंटारियो) स्कूल बोर्डों में शिक्षकों का एक समूह अपने कक्षाओं में एक विधि के रूप में अहिंसा को अपनाने के लिए एक साथ आया है। यह शिक्षकों के लिए छात्रों के रोजमर्रा के जीवन में अहिंसा लागू करने का एक अवसर है। यह प्राथमिक स्तर पर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह बच्चों के दृष्टिकोण और आदतों को सामाजिक हिंसा से दूर करने में मदद करता है और चुनौतियों से निपटने में सक्षम होने के लिए नियमित रूप से उन्हें तैयार करता है।

पोप फ्रांसिस का कहना है : 'न्याय और प्रेम से प्रेरित पारस्परिक संबंधों के संदर्भ में 'मानव' खुद को महसूस करने के लिए नियत प्राणी हैं । इसके विकास के लिए आवश्यक है कि उनकी गरिमा, उनकी स्वतंत्रता और उनकी स्वायत्तता को मान्यता दी जाए और उनका सम्मान किया जाए। दुर्भाग्य से, मनुष्यों द्वारा मनुष्यों के शोषण के बढ़ते व्यापक संकट ने सम्मान, न्याय और प्रेम द्वारा चिह्नित पारस्परिक संबंधों के निर्माण के अपने मिशन को गंभीर रूप से घायल कर दिया है।'

दलाई लामा का कहना है : 'विश्व शांति का विकास आंतरिक शांति से होना चाहिए। शांति केवल हिंसा का अभाव नहीं है। शांति, मुझे लगता है कि मानवीय करुणा का प्रकटीकरण है।'

महान सूफी कवि रूमी का कहना है : 'जो आएगा वह जाएगा। जो मिला है वह फिर खो जाएगा। लेकिन आप जो हैं वह आने और जाने से परे है और वर्णन से परे है। आप ही हैं।'

रामकृष्ण का कहना है : 'जब दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है, तो सभी समान दिखाई देते हैं और अच्छे व बुरे और उच्च या निम्न के बीच कोई विभाजन नहीं होता है।'

खंड VIII : अहिंसा के साथ अर्थव्यवस्था का सुधार

यह खंड गांधी जी के अर्थशास्त्र के बारे में संक्षेप में वर्णन करता है, जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विकसित की गई वैकल्पिक अर्थव्यवस्थाओं की जांच करने के लिए चल रहा है। डीग्रोथ आंदोलन, द ट्रांजीशन टाउन इनिशिएटिव, सामाजिक व एकजुटता अर्थव्यवस्था और हंड्रेड मील कम्युनिटीज आज की दुनिया में संभावनाओं को दर्शाते हैं।

गांधी जी अर्थशास्त्री नहीं थे, लेकिन उनकी आर्थिक दृष्टि संपत्ति के पुनर्वितरण की थी, न कि बढ़ती भौतिक समृद्धि के संदर्भ में, बल्कि मानवीय गरिमा इसमें महत्वपूर्ण रहा है। उनके आर्थिक विचार के तीन पहलू थे : (i) आवश्यकताओं का सरलीकरण या इच्छा की आत्म-सीमा; (ii) उत्पादन के साधनों जो केंद्रीकृत, औद्योगिक और यांत्रिक हैं के बजाय एक विकेन्द्रीकृत, घर-आधारित, हस्तशिल्प-उन्मुख जीवन, जो प्राकृतिक और पर्यावरणीय दुनिया दोनों का सम्मान करता है; और (iii) अर्थशास्त्र पर नैतिकता और आध्यात्मिकता की ट्रस्टीशिप या संरक्षकता।

गांधीवादी अर्थशास्त्र ने भौतिक संपदा के इस पुनर्वितरण की परिकल्पना मानवीय गरिमा की गारंटी के तौर पर की। इसका मतलब यह है कि निजी संपत्ति निरपेक्ष नहीं है, लेकिन सामान रूप से बेहतरी के लिए अधीनस्थ है, और एक व्यक्ति समाज के हितों की अनदेखी करते हुए, अहंकारी संतुष्टि के लिए अपने धन का उपयोग नहीं कर सकता है। विसंगतियों को कम करने की दृष्टि से समय के साथ आय में अंतर उचित, न्यायसंगत और परिवर्तनशील होना चाहिए। उत्पादन आवश्यकता से निर्धारित होना चाहिए, न कि विलासिता की इच्छा से।

मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था के साथ आने वाली वैकल्पिक अर्थव्यवस्थाओं को अलग करने की जरूरत है। पूर्व में, रिश्तों पर जोर दिया जाता है, और बाद में, यह व्यक्तिगत मानवीय आवश्यकताएं बन जाती हैं। विकास प्रतिमान को बदलने में निम्न तत्व शामिल हो सकते हैं : (क) स्व-प्रेरित काम या सामाजिक उद्यम के माध्यम से बुनियादी जरूरतों को प्राप्त करना; (ख) स्थानीय व्यापार नेटवर्क बनाना जो स्थानीय संसाधन का उपयोग और उत्पादन को पूरा करता है; और (ग) आर्थिक निर्णय लेने में

नैतिकता का परिचय। यह बड़े पैमाने पर उत्पादन को बाहर नहीं करता है, लेकिन लोगों की क्षमताओं को अपनी अर्थव्यवस्था में काम करने की प्रधानता देता है, बड़ी बाहरी संरचनाओं पर निर्भरता को कम करता है।

विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्वदेशी और अन्य स्थानीय ग्रामीण समुदायों की जैव-संसाधनों पर आधारित अदृश्य आजीविका हैं। निर्णय लेने के लिए 'बॉटम-अप' यानी नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण के साथ विकेंद्रीकृत तरीके से संसाधनों पर निर्भरता समुदायों को व्यवस्थित रूप से विकसित होने में सक्षम बनाती है। स्थानीय समुदाय विशेष संदर्भों के भीतर समाधान खोजने के लिए सबसे उपयुक्त हैं जिसमें वे रहते हैं।

कुछ समकालीन आंदोलन और पहल जो वैकल्पिक आर्थिक व्यवहारों को दर्शाती हैं :

डीग्रोथ आंदोलन, एक ऐसा आंदोलन है जो आवश्यकताओं को सरल बनाने पर काम करता है, और पारिस्थितिक अर्थशास्त्र पर आधारित है जो इस बात को बनाए रखता है कि पर्यावरण संकट और सामाजिक असमानताओं की जड़ में अतिरेक है। आंदोलन का उद्देश्य गैर-उपभोग्य व्यवहारों के माध्यम से खुशी को बढ़ाना है, जैसे कि काम-साझा योजनाएं, कम पारिस्थितिक पदचिह्न के साथ रहना, सामुदायिक भवन जैसी गैर-खपत गतिविधियों को अधिक समय देना, दुर्लभ पर्यावरण-संसाधनों की सुरक्षा करना और अधिक समय समर्पित करना उन गतिविधियों के लिए जो संस्कृति और पारिवारिक संबंधों को बढ़ाती हैं।

द ट्रांजीशन टाउन इनिशिएटिव, जमीनी स्तर पर सामुदायिक परियोजनाएं हैं जो आत्मनिर्भरता बढ़ाने और जीवाश्म ईंधन पर आधारित वैश्विक अर्थव्यवस्था के संभावित प्रभावों को कम करने के साधन के रूप में कार्यान्वित की जाती हैं। प्रारंभ में यूके में किंसले के एक कॉलेज में एक छात्र की परियोजना पर आधारित था, इसे 2006 में टोटनेस शहर में पुनर्विकसित किया गया था। टोटनेस समुदाय द्वारा पुनर्विकसित करने से पहले एक बदहाल शहर बनने की राह पर था। आयरलैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, इटली और चिली में कई अन्य स्थानीय समुदायों में यह पहल फैल गई। आज 43 देशों में 1,130 जगहों पर यह पहल पंजीकृत है।

सामाजिक व एकजुटता अर्थव्यवस्था, संगठनों और उद्यमों की एक विस्तृत श्रृंखला द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और बिक्री पर आधारित है। उदाहरण के लिए, निकारागुआ में प्रयोग ने अपनी संपत्ति विकसित करने के लिए महिलाओं को एक साथ लाया। संयुक्त राष्ट्र के अनुसंधान निकाय UNRIS ने इस विचार को और विकसित किया। इन आर्थिक इकाइयों में सहकारी समितियां और सामाजिक उद्यम के अन्य रूप शामिल हैं, जैसे स्वयं सहायता समूह, समुदाय-आधारित संगठन और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के संगठन, श्रमिक समूह, सेवा प्रदान करने वाले गैर-सरकारी संगठन, वैकल्पिक वित्त और मुद्रा योजनाएं। अधिकांश क्षेत्रों के लिए, उनके उद्देश्य स्थिरता और समता हैं, और वे सहयोग, एकजुटता, नैतिकता और लोकतांत्रिक स्व-प्रबंधन के सिद्धांतों और प्रथाओं द्वारा निर्देशित हैं।'

हंड्रेड मील कम्युनिटीज भारत में विकसित हुए थे, मुख्य रूप से गुजरात में महिलाओं के आयोजन के अनुभव से। भोजन, आवास, कपड़े, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और बैंकिंग जैसी बुनियादी मानवीय जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थानीय संसाधनों की कमी गरीबी और पलायन को रोकने में एक बाधा है। हंड्रेड मील कम्युनिटीज का विचार स्थानीय अर्थव्यवस्था, स्थानीय संसाधन आधार और स्थानीय समुदाय को लाभ पहुंचाने के लक्ष्य के साथ स्थानीय रूप से उत्पन्न संसाधनों के साथ स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होना था। इन समुदायों को सौ मील के दायरे में अपने संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए।

खंड IX : अहिंसा के साथ शासन और संस्थानों का सुधार

भारत में सर्वोदय आंदोलन की एक संक्षिप्त समीक्षा के बाद, यह खंड लैटिन अमेरिका के स्वदेशी समुदायों - बुएन विविर और मंडेला द्वारा उबंटू की धारणा की अन्य वैश्विक नजरिए पर चर्चा करता है। स्विट्जरलैंड में प्रत्यक्ष लोकतंत्र पर प्रकाश डाला गया है, साथ ही कोस्टा रिका, जॉर्जिया और नेपाल में शांति के विभाग भी हैं। महत्वपूर्ण यह है कि संयुक्त राष्ट्र के भीतर सम्मेलनों, घोषणाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से शासन और संस्थानों के वैश्विक रूपों की प्रकृति और विशेष रूप से इन नीतियों को बनाने में मदद करने में नागरिक समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। जय जगत की ओर से सतत विकास लक्ष्यों और कुछ प्रस्तावित पैरवी का संदर्भ दिया जाता है।

गांधी जी की सर्वोदय आंदोलन की विरासत, जो उनकी मृत्यु के बाद शुरू हुई और लगभग 30 वर्षों (1948-1965) तक जीवित रही, एक स्थानीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था में एक अनूठा प्रयोग था। इस आंदोलन में, पूरे देश में बड़ी संख्या में सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने खादी और ग्रामोद्योग, शिक्षा कार्य और ग्रामीण उत्थान का कार्य किया। विनोबा भावे ने 1951 में भू-दान आंदोलन शुरू किया, जो 1964 तक जारी रहा, जो कि सभ्य समाज में संसाधनों के पुनर्वितरण के लिए एक रास्ता था। इसका उद्देश्य भूमिहीनों को पुनर्वितरण के लिए अतिरिक्त भूमि एकत्र करके कृषि को अधिक न्यायसंगत बनाना था। इसे छोटे पैमाने पर कृषि को बढ़ाने और अंग्रेजों द्वारा मजबूत की गई सामंती व्यवस्था को तोड़ने के रूप में देखा गया। भूदान आंदोलन गरीबों को भूमि संपत्ति हस्तांतरित करने के सबसे बड़े प्रयासों में से एक था। यद्यपि विनोबा भावे 40 लाख एकड़ जमीन इकट्ठा करने में कामयाब रहे, लेकिन इसका केवल एक छोटा सा प्रतिशत वास्तव में हाशिये के गरीबों को हस्तांतरित किया गया। हालांकि, सर्वोदय आंदोलन ने भारतीय कृषि और किसान संबंधों को असंगठित रूप से पुनर्गठित करने की दिशा में काम किया।

जिस तरह सभी की भलाई पर आधारित समाज के निर्माण के लिए गांधीवादी तरीके को आजमाया और परखा गया है, वैसे ही दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में दूसरे प्रयोग हैं। बुएन विविर, निर्णय लेने की

अवधारणा जिसमें सभी समुदाय के सदस्य और प्रकृति शामिल है, कई स्वदेशी समुदायों के लिए केंद्रीय है। एंडेश के क्वेशुआ लोगों की विश्वदृष्टि में निहित है, यह समाज को संगठित करने का एक तरीका है। यह समुदाय-केंद्रित, पारिस्थितिक रूप से पुनर्नियोजित और स्थानीय संस्कृति के प्रति चौकस है। यह इक्वाडोर के संविधान का हिस्सा है, जिसमें लिखा है : 'हम ... इसके द्वारा जीवन के अच्छे तरीके को प्राप्त करने के लिए, विविधता में और प्रकृति के साथ सामंजस्य में, सार्वजनिक सह-अस्तित्व का एक नया रूप बनाने का निर्णय लेते हैं।'

उबंटू समाज में लोगों के बीच साझा करने का एक पारंपरिक Nguni Bantu अफ्रीकी अवधारणा है। यह मानवता और खुले दिल का प्रतीक है, और यह माफी के माध्यम से संघर्ष से निपटने का एक तरीका है। लॉन्ग मार्च टू फ्रीडम में, मंडेला ने लिखा है : जैसा कि मैंने अपनी स्वतंत्रता की दिशा में दरवाज़ा खटखटाया था, मुझे पता था कि अगर मैंने अपने गुस्से, घृणा और कड़वाहट को नहीं छोड़ूंगा, तो अभी भी जेल में रहूंगा।'

शासन की संरचनाओं में सुधार की आकांक्षा उन्हें अहिंसा के लिए और अधिक उत्तरदायी बनाने के लिए भागीदारी विकास की आवश्यकता है। कुछ सरकारों ने शासन संरचनाओं को विकेंद्रीकृत करने पर काम किया है, और कुछ ने शासन के 'नीचे से ऊपर' के मॉडल को अपनाया है। डायरेक्ट डेमोक्रेसी की अवधारणा के साथ स्विट्जरलैंड इसके लिए जाना जाता है, जिसके द्वारा राज्य के कई कार्य स्थानीय स्तर पर होते हैं।

कोस्टा रिका, जॉर्जिया और नेपाल में शांति के साथ शासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुए, शांति विभाग हैं। शांति पर आधारित समाज का निर्माण करने का मतलब है कि सभी सरकारी विभागों, संस्थानों और नीतियों में अहिंसा को कैसे मुख्यधारा में लाया जा सकता है, के लिए प्रयास करना।

सत्ता के अहिंसक अधिग्रहण के कुछ उदाहरण भी हैं। मार्च 2018 में आर्मेनिया के मामले में, निकोल पशियान की पार्टी देश में कई वर्षों के अहिंसक मार्च के बाद सत्ता में आने में सक्षम हुई। यह जीवन के सभी क्षेत्रों में अहिंसा को शामिल करने की असीम संभावनाओं को दर्शाता है।

सम्मेलनों और घोषणाओं पर बातचीत करने में सभ्य समाज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, साथ ही समझौतों के कार्यान्वयन में मदद करता है। विभिन्न लोगों और समुदायों के साथ जुड़ने में, और मानवाधिकारों, न्याय और शांति को ध्यान में रखते हुए, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थानीय विचारों और नवाचारों को लाने में सक्षम होने के कारण उनका एक अनूठा स्थान है। पिछले एक दशक में कई देशों में नागरिक समाज के कमजोर होने से अंतर्राष्ट्रीय नीति-निर्माण और नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में नुकसान हुआ है। जय जगत सतत विकास लक्ष्यों के संबंध में नागरिक समाज की ओर से कार्रवाई को मजबूत करने का एक ऐसा अवसर प्रदान करता है।

सतत विकास लक्ष्य : एक नागरिक समाज का परिप्रेक्ष्य

25 सितंबर 2015 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा में उपस्थित राज्य और सरकारों ने विकास एजेंडा - 2030 को अपनाया और यह सुनिश्चित करने का वचन दिया कि 'कोई भी पीछे नहीं रहेगा', 'हम हल करेंगे'। उन्होंने कहा, '2030 तक, हर जगह से गरीबी और भूख को समाप्त करने के लिए; देशों के भीतर और बाहर असमानताओं से निपटने के लिए; शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और समावेशी समाजों का निर्माण करने के लिए; मानवाधिकारों की रक्षा और लैंगिक समानता और महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए; और ग्रह और उसके प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए, हम राष्ट्रीय विकास और क्षमताओं के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखते हुए सभी के लिए स्थायी, समावेशी और निरंतर आर्थिक विकास, साझा समृद्धि और अच्छे काम के लिए स्थितियां बनाने का भी संकल्प करते हैं।'

2030 का विकास एजेंडा एक व्यापक भागीदारी प्रक्रिया के आधार पर तैयार किया गया था, जिसमें दुनिया भर के नागरिक समाज समूह सक्रिय रूप से शामिल थे। नए एजेंडे को आकार देने में गरीबों से सलाह ली गई। सतत विकास लक्ष्य, सरकारों के विचारों और स्थानीय समुदायों द्वारा व्यक्त विचारों के बीच एक समझौता का परिणाम है।

नए विकास के एजेंडे का उद्देश्य गरीबों की मदद करना है। अब यह पूछने का समय है कि गरीब नए विकास के एजेंडे में कैसे मदद कर सकते हैं?

जय जगत 2020 आंदोलन दुनिया भर के लोगों को एक साथ लाता है। वे विभिन्न भाषाओं का उपयोग करते हैं, लेकिन वे एक स्वर से बोलते हैं। उनका संदेश सरल है : हमें विकास के एक ऐसे रूप की ओर बढ़ने की जरूरत है, जो अहिंसक हो, बजे इसके कि जो मानव और प्रकृति दोनों का शोषण करने वाले संसाधनों के रूप में व्यवहार करता है; विकास का एक रूप जो कुछ के लिए अधिक धन के बजाय सभी के लिए खुशी और कल्याण को बढ़ावा देता है; विकास का एक रूप जो गरीब और हाशिए के समुदायों को अगुवाई की भूमिका में लाता है, बजाय इसके कि केवल उन्हें चुनौती के रूप में देखा जाये।' इस नए विकास प्रतिमान को आकार देने के लिए और इसे वास्तविक बनाने के लिए गरीबों का सशक्तिकरण आवश्यक है।

सभी संसाधनों पर असीम विकास की संभावना सीमित संसाधनों के एक ग्रह पर अपरिहार्य है। हमें विकास के एक अलग मॉडल की आवश्यकता है : एक ऐसा मॉडल जो ग्रहों की सीमाओं का सम्मान करता है और अन्य प्रजातियों के साथ और प्रकृति के साथ मनुष्यों की एक-दूसरे पर निर्भरता को स्वीकार करता है, और यह अनंत जरूरतों के साथ आवश्यक जरूरतों को भ्रमित नहीं करता है। इस तरह के विकल्प को डिजाइन करने के लिए गरीबों का अनुभव आवश्यक है। वे हमारे सामूहिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में हिंसा और प्रतियोगिता के बजाय सामाजिक नवाचारों के निर्माण में, सहयोग व एकजुटता में कम संसाधनों में ज्यादा करने में माहिर हैं।

Olivier de Schutter (2018): Happiness within Boundaries. Declaration produced for Jai Jagat.

संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ जय जगत की पैरवी (वकालत)

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को संबोधित करने के लिए जय जगत अभियान में एकीकृत किए जाने वाले पैरवी के चार स्तंभ हैं :

1. गरीबी उन्मूलन : इसका मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति की बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह एक व्यवहारिक बदलाव पर जोर देता है जिसमें आवश्यक जरूरतों को अनंत चाहतों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना है। गांधी के शब्दों में: सभी की जरूरतों के लिए संसाधन पर्याप्त है, लेकिन किसी के लालच के लिए पर्याप्त नहीं है।'

एक प्रतिद्वंद्वी यह तर्क दे सकता है कि बाजार अमीरों की क्रय शक्ति के माध्यम से मांग का जवाब देते हैं, कि अधिकांश लोग संपन्न जीवनशैली के 'कैच-अप' मिमिक्री द्वारा संचालित होते हैं, जहां धन का संचय आर्थिक स्थिति और राजनीतिक प्रभाव देता है, और इस तरह उन लोगों के साथ एक प्रतिष्ठित जीवनशैली, आर्थिक स्थिति और राजनीतिक प्रभाव शक्ति का उपयोग करते हैं। ऐसे प्रोत्साहन के बिना, जो किसी की इच्छा को सीमित करते हैं, अर्थव्यवस्था टिकाऊ नहीं हो सकती है, और इससे जरूरी टकराव होता है।

जय जगत आंदोलन के माध्यम से निर्धारित रूपरेखा एक सार्वभौमिक परिवार के रखरखाव पर एक उच्च मूल्य रखना है, ताकि ग्रह पर मानव सह-अस्तित्व प्राथमिकता में हो। इसका मतलब यह है कि सामाजिक अनुबंध के नाम पर सरकार से अकेले ऐसा करने की अपेक्षा, एक-दूसरे के बीच धन के पुनर्वितरण में अपनी पहल करने वाले लोगों में अधिक नैतिकता है।

2. सामाजिक भेदभाव को दूर करना : यह नस्ल, जाति, लिंग, धर्म और जातीयता के आधार पर भेदभाव के खिलाफ मानव अधिकारों के लिए सम्मान की मांग करता है। यह शांति और न्याय के ढांचे के भीतर किए जाने की जरूरत है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा बताया गया है। जब लोग जीवन के एक तरीके के रूप में शांति और अहिंसा के लिए खुद को प्रतिबद्ध करते हैं, तो प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग प्रमुख स्थान ले लेता है, और मन की आदत मानव अधिकारों के साथ जुटती है।

3. पारिस्थितिक विनाश और जलवायु संकट को दूर करना : तीसरे स्तंभ के लिए उत्पादन और खपत पैटर्न में बदलाव की आवश्यकता होती है। एक मिथक है कि पर्यावरणीय गिरावट आर्थिक विकास के लिए भुगतान की जाने वाली एक अस्थायी कीमत है, और एक बार धन का उच्च स्तर प्राप्त हो जाता है, तो पारिस्थितिक क्षति को कम करने के लिए पर्यावरणीय उपायों को सहयोग देना संभव है। सार्वजनिक समर्थन और कार्रवाई के आधार के रूप में सामाजिक मूल्यों की अनुपस्थिति में, किसी भी संख्या में तकनीकी नवाचार और वित्तीय प्रतिबद्धताएं, चाहे कितनी भी अच्छी तरह से इरादा और यहां तक कि आवश्यक हो, परिवर्तन लाने और बनाए रखने में सफल होने की संभावना

नहीं है। पृथ्वी और इसकी पुनर्नियोजित क्षमता सहित जीवन के सभी रूपों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता न्यूनतम खपत के लिए खपत को सीमित करने के सामाजिक मूल्य पर आधारित है।

4. संघर्ष को ख़त्म करना : यह अनुमान लगाया जाता है कि आज, युद्ध के रूप में संघर्ष मानव इतिहास के अन्य अवधियों की तुलना में कम है। इस तर्क में जो उपेक्षित है, वह संघर्ष है जो मानव गतिविधि में इतनी गहराई से है कि यह आम बात है। हथियारों की दौड़, रासायनिक और जैविक हथियारों के साथ परमाणु हथियारों का संचय, एक उदाहरण है। स्वचालित हथियार प्रणाली एक तेजी से उभरता हुआ खतरा है। विचार करने में और भी कठिन लगता है - अप्रत्यक्ष हिंसा जो भय, असुरक्षा और निराशा के कारण होती है। अप्रत्यक्ष हिंसा, अक्सर गरीबी का परिणाम है, प्रत्यक्ष हिंसा के लिए प्रजनन आधार बन सकता है। लोग हिंसा के इतने आदी हो रहे हैं कि हिंसक अतिवाद में जुड़ाव एक निरंतर चिंता का विषय है। इसे घुमाने का तरीका एक अहिंसक समाज के निर्माण की प्रतिबद्धता के माध्यम से है।

इसलिए, चुनौती एसडीजी के संबंध में एक शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण ढांचे को देखने की है। इस घोषणापत्र में कार्यान्वयन के लिए कुछ चुनौतियों और संभावित अवसरों पर प्रकाश डाला गया है।

खंड X : निष्कर्ष

जय जगत घोषणापत्र एक दृष्टि कथन है जिसे आज हम जो संकटों का सामना करते हैं, उन्हें आसानी से खारिज नहीं किया जा सकता है। दृष्टि दुनिया के लोगों की वास्तविक उन्नति और हमारे नाजुक ग्रह की सुरक्षा के लिए है। अहिंसा को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंतर्निहित करने की आवश्यकता है। यह आशा की जाती है कि कई लोग जलवायु परिवर्तन और संघर्ष की समस्याओं को दूर करने में इस दृष्टि से प्रतिध्वनि पाते हैं।

परिशिष्ट 1 : अहिंसा की शब्दावली

सहयोगी समूह	लोगों के छोटे समूह जो एक साझा लक्ष्य और दृष्टिकोण के आधार पर विशेष कार्रवाई करने के लिए एक साथ आते हैं।
अहिंसा (नॉनवायलेंस)	इसे बिना शर्त प्यार के सकारात्मक अर्थ से देखा जा सकता है, साथ ही यह विचार, शब्द और कर्म से आघात न करने के अर्थ में भी है।
आश्रम या अहिंसात्मक सेंटर	ऐसा स्थान या केंद्र जो लोगों को अहिंसक होना सिखाता है, और स्थानीय जरूरतमंद लोगों की मदद करता है।
अस्तेय	संस्कृत का एक शब्द जिसका अर्थ है 'चोरी न करने की क्रिया'। गाँधी जी ने इसे आवश्यकता से आधिक आर्जित करने के रूप में वर्णित किया है।
अपरिग्रह	एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ 'कब्ज़ा न करने' या ' गैर नियंत्रण' है। गांधी ने सिखाया कि हमें किसी कब्जे को 'हमारे अधिकार' के रूप में नहीं देखना चाहिए, हम केवल इसके ट्रस्टी या संरक्षक के रूप में है।
प्रिय समुदाय	एक आदर्श समुदाय को दर्शाने के लिए दार्शनिक जोशियाह रॉयस द्वारा गढ़ा गया शब्द। यह मार्टिन लूथर किंग, जूनियर द्वारा न्याय, शांति और सद्भाव के समाज का वर्णन करने के लिए अक्सर इस्तेमाल किया गया था जिसे अहिंसा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
बहिष्कार	एक कंपनी, सरकार या संस्था से समर्थन वापस लेने का एक अभियान, जो नस्लीय भेदभाव जैसे कोई भी अन्याय कर रहा है।
भू-दान	भू-दान आंदोलन की अवधि के दौरान गरीब लोगों को जमींदारों द्वारा दान की गई भूमि।
भू-दान आंदोलन	इसे भूमि उपहार आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है। भू-दान आंदोलन भारत में एक स्वैच्छिक भूमि सुधार आंदोलन था जिसे आचार्य विनोबा भावे ने 1951 में हैदराबाद के बाहर पोचमपल्ली गांव में शुरू किया था।
सविनय अवज्ञा	एक अन्यायपूर्ण, अनैतिक या असंवैधानिक कानून की अंतरात्मा की आवाज से खुलेआम अवहेलना करने का कार्य और अन्याय का विरोध करना, जिसमें आवश्यक कारावास की सजा सहित परिणाम को स्वीकार करना।
नागरिक समाज	समाज के आत्मनिर्भर होने पर जोर है न कि सरकार पर आश्रित होने पर।
साम्यवादी मूल्य	समुदाय में मूल्यों का निर्माण करना, ताकि लोग समझ और कार्रवाई को साझा करें।
कर्तव्यनिष्ठ विरोध	नैतिक मान्यताओं के कारण सैन्य सेवा में भाग लेने से इनकार।

धन या उपहार	लोग सेवा करने के लिए अपना समय स्वयंसेवकों के रूप में या सामाजिक उद्देश्य के लिए अपना पैसा उपहार में देना चाहते हैं, या किसी सामाजिक कार्य के लिए अपने ज्ञान को उपहार में देना चाहते हैं।
धरना या 'बैठना'	अहिंसा की वह विधि जिसमें प्रदर्शनकारी किसी अन्याय के स्थल पर या उसके आस-पास बैठते हैं और निर्धारित समय तक या लक्ष्यों को प्राप्त करने तक हटने से इनकार कर देते हैं।
संवाद	चर्चा और बातचीत के माध्यम से संघर्ष को हल करने की इच्छा।
एकता (एकता)	इसका अर्थ है कि नागरिक समाज को एक साथ आना चाहिए और राजनीतिक दलों द्वारा विभाजित नहीं होना चाहिए।
सशक्तिकरण	यह तब है जब शक्ति का उपयोग अलग तरीके से किया जाता है। "पावर ओवर" नहीं बल्कि "पावर विथ" होना चाहिए। यानी ज्ञान एवं आत्मशक्ति।
घेराव	यह एक अहिंसक तकनीक है जब लोग शिकायत दर्ज करने के लिए शक्तिशाली लोगों या संसथान को घेर लेते हैं।
उपहार अर्थव्यवस्था	एक अर्थव्यवस्था जहां स्पष्ट समझौते के बिना देना होता है। यह दूसरों को देने की भावना से उत्पन्न होता है।
ग्रामदान आंदोलन	विनोबा भावे द्वारा गांवों की आत्मनिर्भरता को इंगित करने के लिए विकसित एक अवधारणा।
ग्राम कोष या ग्राम बैंक	ग्रामीणों द्वारा समय-समय पर पैसे का योगदान होता है ताकि उन सदस्यों को उधार दिया जा सके, जिन्हें न्यूनतम ब्याज पर बीमारी, भुखमरी आदि के समय आवश्यकता होती है।
ग्राम स्वराज	गांव का स्व-शासन, गांधी की सोच में एक महत्वपूर्ण अवधारणा। ग्राम स्वराज की मूल अवधारणा यह है कि प्रत्येक गांव का अपना गणतंत्र होना चाहिए।
हिंद स्वराज	गांधी जी ने 1909 में हिंद स्वराज पर पुस्तक लिखी थीं। विदेशी प्रभुत्व से भारतीय स्वतंत्रता के लिए गांधी जी की अवधारणा से संबंधित 'स्व-शासन' पर यह है।
गरिमामय मानव अधिकार	यह विश्वास कि मानव अधिकारों का सार व्यक्ति की गरिमा है।
जन अदालत या जन सुनवाई	लोगों की शिकायतों के निवारण जनमत के लिए इसे अनौपचारिक व्यवस्था में आयोजित किया जाता है न कि कोर्ट में।
जनादेश	2007 में पैदल मार्च, जिसने भारत में भूमि सुधार पर 'जनता का फैसला' दिया ।
जन सत्याग्रह	भारत में 2012 में उन लोगों के लिए ' न्याय के लिए संघर्ष ' के रूप में पैदल मार्च किया गया था, जो अपने भूमि संसाधनों से वंचित थे।
लोक शक्ति या जन शक्ति	यह तब है जब लोग जिम्मेदारी लेते हैं और सरकार को जवाबदेह बनाते हैं। इस शब्द का इस्तेमाल सरकार द्वारा राजनीतिक सत्ता के झंडे के दुरुपयोग के लिए भी होता है।

नैतिक उत्तेजना	एक विरोधी या जनता के नैतिक विश्वासों के लिए अपील करने के लिए व्यवहारवादी या दृष्टिकोण को बदलने के लिए विरोधी को समझाने के लिए ।
नकारात्मक शांति	युद्ध की अनुपस्थिति।
मोल-भाव या समझौता	किसी संघर्ष के प्रति संकल्प को सुरक्षित करने और प्रतिकूल परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए सद्भाव में विरोधियों के साथ चर्चा, समझौता और सौदेबाजी की प्रक्रिया।
असहयोग	व्यक्तियों, सरकारों, संस्थाओं, नीतियों या कानून के साथ सहयोग से इनकार की गतिविधियों में भाग लेना, जिसका परिणाम हिंसा या अन्याय है।
असहयोग के प्रति दृढ़ता	एक दर्शन जो हिंसा पर आधारित होने से पूरी तरह से इनकार करता है क्योंकि यह नैतिक रूप से गलत है।
अहिंसक संचार	मार्शल रोसेनबर्ग द्वारा बनाई गई एक कौशल-आधारित संचार कार्यप्रणाली जो व्यक्तियों के बीच संघर्ष को हल करने के लिए है।
संघर्ष का अहिंसक समाधान	यह विधि दो असहमत दलों को उनके संघर्ष को हल करने के लिए प्रोत्साहित करती है। विशेष मामलों में, एक तृतीय पक्ष मध्यस्थता करने में मदद कर सकता है।
अहिंसक प्रत्यक्ष क्रिया	अन्याय के प्रति अहिंसक प्रतिरोध। अहिंसक प्रत्यक्ष कार्रवाई के कई रूपों की पहचान की गई है, जिसमें पदयात्रा, बहिष्कार, घेराव, धरना और प्रार्थना आदि शामिल हैं।
अहिंसक अर्थव्यवस्था	यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो लोगों की जरूरतों, नैतिकता और स्थानीय कार्रवाई पर आधारित है।
अहिंसक शिक्षा	यह शैक्षिक संस्थानों में कई स्तरों पर काम कर रहा है, जो सहयोग, समाज के लिए स्व-सेवा की भावना का निर्माण करता है। गांधी की नई तालीम शिक्षा के रूप से आकर्षित, यह बच्चों को अहिंसा के आधार पर समाजों का निर्माण करना सिखाता है।
अहिंसक सामाजिक आंदोलन	सामाजिक मुद्दों पर लोगों की शक्ति निर्माण कर नीति या कानून में बदलाव के लिए दबाव डालना।
अहिंसक समाज	एक अहिंसक समाज का निर्माण करने के लिए अहिंसक कार्रवाई ।
अहिंसक संघर्ष	यह प्रतिरोध का एक रूप है जो उन लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है जो एक समूह द्वारा सत्ता या शक्ति का सामना कर रहे हैं।
शांतिवाद	विरोध या नैतिक आधार पर किसी भी प्रकार की हिंसा का उपयोग करने से इनकार करता है।
पदयात्रा या फुटमार्च	विभिन्न समूहों के साथ अधिक निकटता से बातचीत करने और समर्थकों को एकजुट करने के लिए पैदल यात्रा शुरू की गई।
निष्क्रिय प्रतिरोध	अन्यायपूर्ण कानून, कार्रवाई या नीति का समर्थन या सहयोग करने से इनकार करके एक अन्याय को चुनौती देना। 'निष्क्रिय' शब्द

	भ्रामक है क्योंकि निष्क्रिय प्रतिरोध में सक्रिय समर्थक अहिंसा, जैसे कि यात्रा, बहिष्कार और सक्रिय विरोध के अन्य रूप शामिल हैं।
शांति विभाग	जिस तरह हर सरकार में रक्षा मंत्रालय होता है, उसी तरह शांति मंत्रालयों का होना भी जरूरी है।
शांति का लेंस	यह शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के निर्माण के लाभ के लक्ष्य के साथ विकास नीतियों को फ्रेम करने का एक तरीका है।
सकारात्मक शांति	युद्ध या संघर्ष की अनुपस्थिति के बजाय सभी लोगों के लिए न्याय।
व्यक्तिगत प्रतिबद्धता या प्रतिज्ञा लेना	एक अन्याय को खत्म करने के लिए अहिंसक कार्रवाई में भाग लेने का आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक निर्णय। यह प्रतिबद्धता या प्रतिज्ञा के माध्यम से किया जा सकता है।
शांति चक्र	शांतिपूर्ण रिश्तों के विस्तार के लिए लोग कई तरह से शांति चक्रों यानी तरीकों का उपयोग करते हैं। इसका उपयोग प्रायः पुनर्स्थापनात्मक न्याय में किया जाता है।
याचिका या हस्ताक्षर अभियान	किसी नीति, प्रस्ताव या कानून के समर्थन या विरोध में भारी संख्या में हस्ताक्षर इकट्ठा करना।
शुद्धिकरण	क्रोध, स्वार्थ की आत्मा से सफाई और एक अहिंसक संघर्ष की तैयारी में हृदय परिवर्तन।
सुलह	अहिंसा का अंतिम लक्ष्य। संघर्ष के हल के बाद समुदाय की भावना में विरोधियों को एक साथ लाना।
मुक्ति	बदला लेने या प्रतिशोध लेने की भावना के बिना दुख को स्वीकार करने की इच्छा। जब कोई व्यक्ति या समूह किसी अच्छे कारण के लिए अन्याय और दुर्व्यवहार का अनुभव करता है, तो यह आगे चलकर बेहतर करने में मदद करेगा।
पीड़ा	विपक्षी को कार्रवाई का एक वैकल्पिक तरीका पेश करना जो उन्हें सार्वजनिक शर्मिंदगी देता है।
उत्तरदायित्व	जिम्मेदारी लेना प्रत्येक नागरिक के लिए एक कार्य है। यदि सरकार को सभी जिम्मेदारी लेने से इनकार करती है, तो सत्ता का संभावित दुरुपयोग होता है।
दृढ न्याय	बल्कि दंडात्मक न्याय चुनने से, वहाँ सुधार का एक अहिंसक तरीका है behavio यू आर व्यक्तियों की जो अन्य घायल हो गए हैं। विपक्षी को कार्रवाई का एक वैकल्पिक कोर्स पेश करना जो उन्हें सार्वजनिक शर्मिंदगी देता है।
सर्वोदय या 'सभी के लिए कल्याण'	इसे समावेशी विकास के रूप में देखा जाता है।
सत्याग्रह या सत्य बल	आत्म-बल 'के लिए यह एक हिंदी शब्द है, गांधी ने सामाजिक संघर्ष में असत्य पर सत्य और प्रेम की शक्ति को जोर देने के लिए इस शब्द को गढ़ा। यह संस्कृत के शब्दों सत्य और ग्रह को जोड़ती है, जिसका अर्थ है - लगातार सत्य बल धारण करना।
सेवा या स्व-सेवा	दूसरों की सेवा में रहना और दूसरों के हितों को अपने हित में रखना।

शांति सेना या शांति सैनिक	यह उन लोगों का वर्णन करता है जो संघर्ष को रोकते हैं और हिंसक व्यवस्था में शांति की भावना लाने में मदद करते हैं। इसका उपयोग एक अहिंसक शांति सेना के रूप में भी किया जाता था।
एकजुटता	यह लोगों के समूह में से एक है जो दूसरे समूहों की सहायता करते हैं ताकि उनकी समस्याओं का अच्छे से समाधान हो सके।
स्वदेशी	संस्कृत के शब्दों का एक संयोजन, इसका अर्थ है 'स्व-शासन' या 'आत्मनिर्भरता'। यह उत्पादन, विनिमय और उपभोग में स्थानीयता के विचार से, विश्व स्तर पर कार्यान्वयन की सोच और स्थानीय रूप से कार्य करने 'के लिए आंतरिक शांति की आवश्यकता को संदर्भित कर सकता है।
स्वराज्य	स्वराज का अर्थ है 'स्व-शासन'। गांधी जी के लिए यह एक अभिन्न क्रांति थी जो जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करती थी। व्यक्तिगत स्तर पर स्वराज, स्व-मूल्यांकन, निरंतर आत्म-शोधन और बढ़ती स्वदेशी या आत्मनिर्भरता के लिए क्षमता से जुड़ा हुआ है।'
teach	किसी विशेष मुद्दे के बारे में जनता को सूचित करने के लिए सार्वजनिक सुनवाई, व्याख्यान, पैनल चर्चा, नाट्य प्रस्तुतियां, फिल्मों दिखाना, नाटक और अन्य शैक्षिक तकनीकों सहित आयोजनों की एक संगठित श्रृंखला।
ट्रस्टीशिप	यह एक विश्वास है कि कोई भी संपत्ति का मालिक नहीं है, कि हम सभी ट्रस्टी हैं। गांधी और बाद में कुमारप्पा ने सिखाया कि हमें किसी भी वस्तु को 'हमारे' के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि खुद को उस संपत्ति के रूप में सौंपा जाना चाहिए जिसका उपयोग सभी की भलाई के लिए किया जा सके।
उपवास	अहिंसक कार्रवाई के लिए, या विरोध के रूप में आध्यात्मिक रूप से मजबूत होने के लिए उपवास या आत्म-शुद्धि की विधि के रूप में खाने से इनकार करना।
वसुधैव कुटुम्बकम	'दुनिया एक परिवार है।'
जलूस	एक प्रकार का विरोध जिसमें व्यक्ति और समूह खड़े होते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, या किसी अन्याय से जुड़ी साइट पर प्रार्थना करते हैं या प्रतीकात्मक रूप से स्वतंत्रता, न्याय या शांति के सिद्धांतों से जुड़े होते हैं।
यात्रा या आध्यात्मिक यात्रा	यह आध्यात्मिक यात्रा है जिसे गांधीवादी में समाहित किया गया है। गरीब लोगों के हित में यात्रा करते हुए अहिंसक आंदोलन।

JAI JAGAT 2020

ON THE MOVE FOR JUSTICE AND PEACE

BAA BAAPU 150

प्रतिबद्धता

हर जगह हमारे जीवन के तरीके में गहन बदलाव की इच्छा बढ़ती जा रही है, ताकि हम हमारी अर्थव्यवस्था को और मजबूत बना सके, जय जगत अभियान मानव अधिकारों के आधार पर पूरे जगत के लोगों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने का उद्देश्य है |

मिशन

- वैश्विक परिवर्तन रणनीति और एक साथ रहने के तरीके के रूप में गांधी के संदेश अहिंसा, को बढ़ावा देना |
- व्यक्तियों, संस्थानों और समाज को बदलने के लिए जय जगत के यात्रिओं को परिवर्तन निर्माताओं को एक उदाहरण के रूप में तैयार करना |
- महिलाओं, युवाओं और गरीबों के ज्ञान को पहचानना और सुनिश्चित करना कि वे इस अभियान के मुख्य अभिनेता के रूप में सशक्त हैं |
- स्थानीय समाधान वैश्विक परिवर्तन में कैसे योगदान करते हैं, इसके बारे में जागरूक करना |
- सामाजिक भेदभाव, जलवायु कार्रवाई और अहिंसा के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों (एजेंडा 2030) का निर्माण करना |
- सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स की पूर्ति अभियान के चार स्तंभों: गरीबी उन्मूलन, सामाजिक बहिष्करण का नाश, जलवायु परिवर्तन, और अहिंसा के द्वारा करना |

मूल्य

- शांति प्राप्त करने के लिए शांति कार्य: जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं वह खुद में लाना होगा |
- विरोध के बजाय प्रस्ताव; "हमारे और उनके" रिश्ते सुधारने की पहल |
- सामान्य भलाई की सेवा में जय जगत के खुलेपन, सहयोग और समावेश के विचार का सम्मान |

अधिक जानकारी के लिए:

www.jaijagat2020.org

पता : गाँधी भवन , श्यामला हिल्स भोपाल - 462002